Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖۤ
اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْٓءِ
وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا بِعَذَابٍۭ بَئِيْسٍ
بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ

(सूरः ऐराफ़ :66)

अनुवाद : अतः जब उन्होंने वे भुला दिया जिसकी उन्हें नसीहत की गई थी तो हम ने उनको जो बुराई से रोका करते थे बचा लिया और उन लोगों को जिन्होंने ज़ुलम किया उनकी बदकारियों के कारण एक सख़्त अज़ाब में जकड़ लिया।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 7
अंक- 43-44

साप्ताहिक क़ादियान
बदर
Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

30-07 रबीउल सानी 1444 हिज्री कमरी, 27-03 नबुव्वत 1401 हिज्री शम्सी, 27-03 नवम्बर 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : कोई नबी नहीं जिसने बकरियां न चराई हों

(2262) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : अल्लाह ने कोई ऐसा नबी नहीं भेजा जिसने बकरियां न चराई हूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया (हे रसूलुल्लाह!) क्या आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भी (चराई हैं?) आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : हाँ, मैं भी चंद किरातों के बदले मक्का वालों की बकरियां चराया करता था।

(किताब अल् इजारा)

(व्याख्या) हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वलीउल्लाह शाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हो इसकी व्याख्या करते हुए फ़रमाते हैं : हज़रत-ए-मूसा अलैहिस्सलाम के बकरियां चराने का वर्णन सूरः ताहा में अवतरित हुआ है। फ़रमाते हैं : اَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِيْ (ताहा : 19) अर्थात मैं अपने सोंटे से अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूँ और तौरात की किताब ख़ुरूज बाब : 3 में लिखा है : "और मूसा अपने ख़ुसर यतीरों की जो मदायन का काहिन था, भेड़ बकरियां चराता था।"

(ख़ुरूज, बाब 3-1)

इसी वाक़िया की तरफ़ सूरा ताहा की ऊपर वर्णित आयत में इशारा है। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के विषय में बाब : 16 में यह शब्द हैं : "फिर समोयल ने यस्सी से पूछा क्या तेरे सब लड़के यही हैं। उसने कहा : सबसे छोटा अभी रह गया। वह भेड़ बकरियां चराता है। समोयल ने यस्सी से कहा : उसे बुला भेज क्योंकि जब तक वह यहां न आ जाए, हम नहीं बैठेंगे। अतः वह उसे बुलवा कर अन्दर लाया।" (1-समोयल, बाब 16 - 11 से 13)

पैदाइश बाब : 7 में हज़रत-ए-नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती में चरिंद परिंद सवार करने और बाब :12 में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास अय्याम हिज्रत में भेड़ बकरियों इत्यादि के बकसरत होने का वर्णन भी पाया जाता है।

अह्दनामा क़दीम के सहीफ़े (सलातीन, तवारीख इत्यादि) पढ़ने से यह बात साफ़ मालूम होती है कि इसराईली क़बायल का जीवन अधिकतर बकरियों इत्यादि पर था और उनके पास गल्ला बानी का आम रिवाज था। बचपन ही से जानवरों को हाँक कर चरागाहों और चश्मों पर ले जाते और उनमें से जो अम्बिया और सोलहा हुए हैं वे उस ज़माने में अपने गल्लो के साथ समय व्यतीत किया करते थे। उद्देश्य आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपर वर्णित इरशाद की तसदीक़ तारीख़ से होती है। आरंभिक ज़माने अर्थात खेती बाड़ी करने से पूर्व भेड़ बकरी इत्यादि जानवरों पर इन्सान का गुज़ारा हुआ करता था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वर्णन में किसी दूसरी तावील की ज़रूरत नहीं बल्कि तारीख़ बशरी में यह बात बतौर अमर वाक़िया दर्ज है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उस्वा-ए-हसना में इन लोगों के लिए सबक़ है जो मज़दूरी पर काम करना तुच्छ समझ कर उससे गुरेज़ करते और भीख मांगते फिरते हैं। भिक्षावृत्ति जो एक ज़लील तरीन पेशा है, उसे इख़्तेयार करते हैं। मुस्लमानों की तबाही का एक बड़ा कारण यह भी है कि वे मेहनत मज़दूरी से जी चुराते हैं।

(बुख़ारी, भाग 4 मुद्रित 2008 क़ादियान)

ख़ुदा तआला ने मेरे नफ़्स को ऐसा मुस्लमान बनाया है कि अगर कोई शख़्स साल भर मेरे सामने बैठ कर मेरे नफ़्स को गंदी से गंदी गाली देता रहे, अततः वही शर्मिंदा होगा

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"मैं अपने नफ़्स पर इतना क़ाबू रखता हूँ और ख़ुदा तआला ने मेरे नफ़्स को ऐसा मुस्लमान बनाया है कि यदि कोई शख़्स एक साल भर मेरे सामने बैठ कर मेरे नफ़्स को गंदी से गंदी गाली देता रहे, अततः वही शर्मिंदा होगा और उसे इक़रार करना पड़ेगा कि वह मेरे पांव जगह से उखाड़ नहीं सका।"

लोगों की तकालीफ़ और शरारतों से आप कभी भयभीत नहीं हुए। इस बारे में फ़रमाया "कोई मामला ज़मीन पर वाक़्य नहीं होता जब तक पहले आसमान पर तै न हो जाए और ख़ुदा तआला के इरादा के बग़ैर कुछ भी नहीं हो सकता और वह अपने बंदा को ज़लील और ज़ाए नहीं करेगा।"

जालंधर के मुक़ाम में फ़रमाया : "इबतेला के वक़्त हमें अंदेशा अपनी जमाअत के कुछ कमज़ोर दिलों का होता है। मेरा तो यह हाल है कि अगर मुझे साफ़ आवाज़ आवे कि तू नीच है और तेरी कोई मुराद हम पूरी नहीं करेंगे तो क़सम है मुझे उस की ज़ात की उस इशक़-ओ-मुहब्बत इलाही और ख़िदमत-ए-दीन में कोई कमी वाक़्य नहीं होगी। इस लिए कि मैं तो उसे देख चुका हूँ।" फिर यह पढ़ा : هَلْ تَعْلَمُ لَهٗ سَمِيًّا (मर्यम : 66)

अपने ख़ादिम हामिद अली को अपनी डाक डाकखाना में डालने को दी। इस से वह कहीं फ़रामोश हो गई। एक हफ़्ते के बाद कूड़े क्रकट के ढेर से उसके बरामद होने पर हामिद अली को बुला कर और पत्र दिखा कर बड़ी नरमी से सिर्फ इतना कहा "हामिद अली, तुम्हें भूलने की बिमारी बहुत हो गई है। फ़िक्र से काम किया करो।"

(मल्-फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 411 मुद्रित क़ादियान : 2018)

★ ★ ★

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अज़ीमुश्शान औसाफ़ और बेशुमार ख़ूबियों के मालिक थे

"बावजूद इतनी ख़ूबियों के वह ख़ुदा ही का बंदा रहा और अपने नफ़्स की ख़ूबियों को अपनी तरफ़ मंसूब करके शिर्क का मुर्तक़िब कभी नहीं हुआ।"

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत नहल आयत : 121 وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِيْفًا (अनुवाद इब्राहीम निसंदेह प्रत्येक (ख़ैर का संग्रहीता, अल्लाह (तआला के लिए विनम्रता इख़्तेयार करने वाला (और हमेशा ख़ुदा की कामिल फ़र्माबरदारी करने वाला था और वह मुशरिकों में से नहीं था) की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

“एक दफ़ा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु को संबोधित करते हुए फ़रमाया कि

मैंने तुम को बहुत हुक्म दीए किन्तु मैंने तुमसे मुख़लिस तरीन लोगों के अंदर भी कई दफ़ा विरोध की रूह देखी लेकिन अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो के अंदर मैंने यह रूह कभी नहीं देखी।”

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की विशेषताओं और गुणों का ईमान वर्धक वर्णन

आदरणीय समीउल्लाह स्याल साहिब वकील-ए-ज़राअत तहरीक-ए-जदीद अंजुमन अहमदिया रब्वः और आदरणीया सिद्दीक़ा बेग़म साहिबा की वफ़ात पर उनका ज़िक्र-ए-ख़ैर और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो’मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 23 सितम्बर 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के मनाक़िब वर्णन हो रहे थे। आज भी यह सिलसिला जारी रहेगा। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से मर्वी है कि आयत اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ مِنْ بَعْدِ مَا اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِيْمٌ (आले इमरान : 173) कि वे लोग जिन्हों ने अल्लाह और रसूल को लब्बैक कहा बाद उसके कि उन्हें ज़ख़म पहुंच चुके थे उनमें से उन लोगों के लिए जिन्हों ने एहसान किया और तक़्वा इख़्तेयार किया बहुत बड़ा अज्र है। इसके बारे में उन्होंने उर्वा से फ़रमाया कि हे मेरी बहन के बेटे तेरे वालिद हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो उनमें से थे कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अहद के दिन जो तकलीफ़ पहुंची वह पहुंची और मुशरेकीन चले गए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अंदेशा हुआ कि वापस आएँगे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया उनके पीछे कौन जाएगा तो उन में से सत्तर आदमियों ने अपने आपको पेश किया। उर्वा कहते थे उनमें हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो भी थे।

(सही अल् बुख़ारी, किताब अल् मग़ाज़ी, बाब الذین استجابوا للہ والرسول، नंबर : 4077)

अबू सुफ़ियान जब जंग अहद के ख़ातमे के समय दर्रे में था और उसने कहा आइन्दा वर्ष इन्ही दिनों में बदर के स्थान पर फिर जंग का वादा रहा और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे क़बूल फ़रमाया तो अबूसुफ़ियान जल्दी से अपने लश्कर को लेकर मक्का की तरफ़ रवाना हो गया। उस से आगे के वाक़ियात हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने यूं बयान किए हैं कि “आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मज़ीद एहतेयात के ख़्याल से फ़ौरन सत्तर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु की एक जमाअत जिसमें हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो भी शामिल थे तैयार करके लश्कर-ए-क़ुरैश के पीछे रवाना कर दी। यह बुख़ारी की रिवायत है। आम इतिहासकार यूं वर्णन करते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु या बाअज़ रिवायतों की दृष्टि से हज़रत साद बिन व्क्कास रज़ियल्लाहु अन्हु को क़ुरैश के पीछे भिजवाया और उन से फ़रमाया कि इस बात क पता लाओ कि लश्कर क़ुरैश मदीना पर हमला करने की नीयत तो नहीं रखता और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनसे फ़रमाया अगर क़ुरैश ऊंटों पर सवार हों और घोड़ों को ख़ाली चला रहे हों तो समझना कि वे मक्का की तरफ़ वापस जा रहे हैं, मदीना पर हमला आवर होने का इरादा नहीं रखते और अगर वे घोड़ों पर सवार हों तो समझना उनकी नीयत बख़ैर नहीं। और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनको ताकीद फ़रमाई कि अगर क़ुरैश का लश्कर मदीना का रुख करे तो फ़ौरन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सूचना दी जाए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बड़े जोश की हालत में फ़रमाया कि अगर क़ुरैश ने इस वक़्त मदीना पर हमला किया तो ख़ुदा की क़सम हम उनका मुक़ाबला करके उन्हें इस हमला का मज़ा चखा देंगे। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के भेजे हुए आदमी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इरशाद के अधीन गए और बहुत जल्द यह ख़बर लेकर वापस आ गए कि क़ुरैश का लश्कर मक्का की तरफ़ जा रहा है।”

(सीरत ख़ातमन नाबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, पृष्ठ 499-500)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन किया कि हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि हमारे साथ उम्मे एमन की तरफ़ चलें। हम उनकी ज़यारत करें जिस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनसे मिलने के लिए तशरीफ़ ले जाते थे। उन्होंने यानी हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि जब हम उनके पास पहुंचे तो वह रोने लगीं। इन दोनों ने कहा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हा क्यों रोती हैं? जो भी अल्लाह के पास है वह उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए बेहतर है। वह कहने लगीं कि मुझे मालूम है कि जो भी अल्लाह के पास है वह उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए बेहतर है लेकिन मैं इसलिए रोती हूँ कि अब वह्यी आसमान से मुनक़ते हो गई है। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि उम्मे एमन ने इन दोनों को भी रुला दिया। वे दोनों भी उनके साथ रोने लगे। (सुंन इब्ने माजा, किताब जनायज़, नंबर : 1635)

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे लोगो अल्लाह ने मुझे तुम्हारी तरफ़ अवतरित किया और तुमने कहा तू झूठा है और अबू बकर ने कहा सच्चा है और उन्होंने अपनी जान-ओ-माल से मेरे साथ हमदर्दी का इज़हार किया।

(सही अल् बुख़ारी, किताब फ़ज़ायल अस्हाबुन्नबी (स.ल.), बाब क़ौल अन्नबी (स.ल.) لو کنت متخذا خلیلا, हदीस 3661)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस बात के बारे में फ़रमाते हैं कि केवल “हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो ही ऐसे थे जिनके विषय में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वालही वसल्लम फ़रमाते हैं कि तुम में से प्रत्येक ने मेरा इंकार किया मगर अबू बकर ऐसा था जिस में मैं ने कोई टेढ़ापन नहीं देखा।” (ख़ुतबात-ए-महमूद, भाग 26, पृष्ठ 277-278)

सुलह हुदैबिया के अवसर पर जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और क़ुरैश मक्का के मध्य सुलह का मुआहिदा हो रहा था और अबू जदल को नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुआहिदे की शरायत के मुताबिक़ वापस कर दिया

शेष पृष्ठ 7 पर

ख़ुत्बः जुमअः

"हमारी जमाअत के लिए विशेषता तक़्वा की ज़रूरत है विशेषतः इस ख़्याल से भी कि वे एक ऐसे शख़्स से समबन्ध रखते हैं जिस का दावा मामूरियत का है ताकि वे लोग जो चाहे किसी किस्म की घृणा द्वेष या शिर्कों में ग्रस्त थे या कैसा ही दुनिया का प्रभाव था इन समस्त आफ़ात से निजात पावें।" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

आज से एक सौ बीस साल पहले अल्लाह तआला से ख़बर पा कर जिस झूठे दावेदार और दुश्मन-ए-इस्लाम की हलाकत की भविष्यवाणी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाई थी

आज उसके शहर में जिसके बारे में उसका ऐलान था कि कोई मुस्लमान यहां दाख़िल नहीं हो सकता जब तक वह ईसाई नहीं हो जाता अल्लाह तआला ने जमाअत को मस्जिद बनाने की तौफ़ीक़ दी

अज़ीम है मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद जो मसीह है जिन्हों ने डोई के भयावह अंजाम की ख़बर दी

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा हासिल होने वाली फ़तह को मुस्तक़िल तब्लीग़ और दुआओं से दाइमी करने की ज़रूरत है

हम ने मुस्लमानों को भी दीन-ए-वाहिद पर जमा करके उनके अंदर से समस्त बिदआत को ख़त्म करना है

और ग़ैर मुस्लिमों को भी इस्लाम की ख़ूबसूरत तालीम से अवगत करवा कर उन्हें ख़ुदा-ए-वाहिद की इबादत करने वाला और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेजने वाला बनाना है

अतः आज इस मस्जिद का बड़ा उद्घाटन तब बनेगा जब हम इस हक़ीक़त को पहचान लें कि हमारी ज़िंदगी का उद्देश्य क्या है

हमारा उद्देश्य मस्जिदों को आबाद करना और अल्लाह तआला के हुक्मों पर चलते हुए आबाद करना है और अल्लाह तआला की रज़ा के हुसूल के लिए आबाद करना है और होना चाहिए

हे मसीह मुहम्मदी के ग़ुलामों! प्रत्येक फ़तह का निशान हमारे अंदर एक इन्केलाब पैदा करने वाला होना चाहिए, अतः यह अह्द करें कि आज का दिन हमारे अंदर एक रुहानी इन्केलाब लाने का दिन होगा

मस्जिद फ़तह-ए-अज़ीम सीहोन अमरीका के उद्घाटन के अवसर पर जमाअत के लोगों को मसाजिद के हुक़ूक़ अदा करने तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तालीमात पर अमल पैरा होने के उपदेश

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 30 सितम्बर 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज आप यहां ज़ायन (zion) की मस्जिद के उद्घाटन के लिए जमा हैं। अल्लाह तआला ने जमाअत-ए-अहमदिया अमरीका को तौफ़ीक़ दी कि इस मस्जिद का निर्माण करे और इस शहर में करे जो जमाअत की तारीख़ में एक ख़ास एहमियत रखता है। दो दिन पहले एक जर्नलिस्ट ने मुझ से प्रश्न किया कि यह मस्जिद यहां के लिए इतनी अहम क्यों है? मस्जिद तो हमारे लिए प्रत्येक अहम होती है। मैंने उसे यही कहा था। समस्त मसाजिद ही हमारे लिए अहम हैं। उसका ख़्याल था कि सिर्फ इस मस्जिद के लिए खासतौर पर मैं यहां आया हूँ। मैंने कहा पहले भी मैं मसाजिद के उद्घाटन के लिए जाता रहता था। तो बहरहाल उसको मैंने कहा कि इस मस्जिद की एक एहमियत भी है और वह यह है कि यह मस्जिद इस शहर में तामीर हुई है जो एक मुख़ालिफ़-ए-इस्लाम का आबाद किया हुआ शहर है और जिन लोगों को तारीख़ से दिलचस्पी है वे इस तारीख़ के जानने की कोशिश करेंगे और क्योंकि जमात के इलावा तो कोई इस शहर की तारीख़ को नहीं जानता, न डोई को कोई जानता है। इस तारीख़ के बताने के लिए एक नुमाइश का एहतिमाम भी जमाअत ने किया हुआ हैं जिस से इस तारीख़ पर रोशनी पड़ती है जो जमाअत के नज़दीक इस शहर की एहमियत है और जिनको दिलचस्पी है वे इस नुमाइश से कुछ हद तक फ़ायदा भी उठा सकते हैं। शायद वे कल इस बारे में आर्टीकल भी लिखेगे। बहरहाल जैसा कि मैंने कहा इस शहर की तारीख़ी एहमियत और एक तथाकथित दावेदार और इसका हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ़ ग़लत ज़बान प्रयोग करना और फिर उसका ख़ातमा होना और इस शहर में जमाअत का क़ायम होना प्रत्येक अहमदी को अल्लाह तआला का शुक्र अदा करने वाला बनाता है और बनाना चाहिए और इसके लिए आँहज़रत

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद के मुताबिक़ हम इस शहर के लोगों का भी शुक्रिया अदा करते हैं जिन्होंने बावजूद इसके कि शुरू में कौंसल ने मस्जिद की तामीर की मुख़ालिफ़त की थी, बनाने से इंकार कर दिया था। लोग हमारे हक़ में खड़े हुए और कौंसल को मजबूर किया कि वे हमें मस्जिद की तामीर की इजाज़त दे दे।

अतः आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ही यह इरशाद है कि जो लोगों का शुक्रिया अदा नहीं करता वह ख़ुदा तआला का भी शुक्रगुज़ार नहीं है। (सुंन अल् तिर्मेज़ी, ابواب البر والصلة، باب ما جاء فی الشکر لمن احسن الیك हदीसा 1954)

अतः इस इरशाद के तहत हमें ख़ुदा तआला, इस अज़ीम ख़ुदा का शुक्रिया अदा करना चाहिए जिसने हमें इस मस्जिद के निर्माण की तौफ़ीक़ दी। अतः इस लिहाज़ से हम अहमदियों के लिए एक सरफ ख़ुशी का दिन नहीं है बल्कि इंतेहाई शुक्रगुज़ारी का दिन भी है। इस ख़ुदा की शुक्रगुज़ारी का दिन जिसने हमें मस्जिद की तामीर के साथ ज़माने के इमाम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आशिक़-ए-सादिक़ की सच्चाई का भी ज़िंदा निशान दिखाया।

तारीख़ के पृष्ठों में भी, जो इस ज़माने की तारीख़ है इस में से भी चंद बातें में वर्णन करूँगा जिससे इस एहमियत का और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का और लोगों के इस को तस्लीम करने का पता चलता है और जितना हम शुक्रगुज़ार बनेंगे उतना ही ख़ुदा तआला हमें अपने फ़ज़लों से नवाज़ता रहेगा और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई के निशान हम पर खुलते जाऐंगे।

अतः यह हमारी शुक्रगुज़ारी की हालत है जो हमें इन निशानों की सच्चाई का गवाह बनाएगी। बेशक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से अल्लाह तआला के वादे हैं, जमाअत की तरक़्क़ी के बेशुमार वादे हैं वे आपको जमाअत की प्रगति दिखाएगा। दिखाए और दिखा रहा है और आइन्दा दिखाएगा लेकिन हम इन प्रगतियों के देखने और उनका हिस्सा बनने के हक़दार तब होंगे जब हम अल्लाह तआला के शुक्रगुज़ार होंगे और अल्लाह तआला के हुक्मों को बजा लाने वाले होंगे और उसका हक़ अदा करने वाले होंगे।

बेशुमार वादे हैं जो हमने अपनी ज़िंदगियों में पूरे होते देखे। अल्लाह तआला अपने वक़्त पर प्रत्येक वादे के पूरा होने के नज़ारे दिखाता है। ये वादों के पूरा होने का नज़ारा नहीं तो और क्या है कि आज से एक सौ बीस साल पहले अल्लाह तआला से ख़बर पा कर जिस झूठे दावेदार और दुश्मन-ए-इस्लाम की हलाकत की भविष्यवाणी आप ने फ़रमाई थी आज उसके शहर में जिसके बारे में इसका ऐलान था कि कोई मुस्लमान यहां दाख़िल नहीं हो सकता जब तक वे ईसाई नहीं हो जाता अल्लाह तआला ने जमाअत को मस्जिद बनाने की तौफ़ीक़ दी।

अतः यह हैं अल्लाह तआला के काम। एक अरब पति और दुनियावी जाह-ओ-हशमत रखने वाले को अल्लाह तआला ने झूठा कर दिया, ख़त्म कर दिया और पंजाब के एक छोटे से गांव में रहने वाले अपने फ़िरिस्तादे का दावा जो इस्लाम की निशात सानिया के साथ किया गया था। दुनिया के दो सौ बीस देशों में गूँजने के सामान पैदा कर दिए। लेकिन क्या यहां हमारा काम ख़त्म हो जाता है? क्या यही काफ़ी है कि अमरीका के एक छोटे से शहर में हमने मस्जिद बना ली और जमाअत को तरक़्क़ी मिल गई? नहीं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लिए तो अल्लाह तआला ने पूरी दुनिया को मैदान-ए-अमल बनाया है। हमने तो छोटे शहर, बड़े शहर और मुल्कों को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में लाना है। हम अगर अपने वसायल देखें तो यह बड़ा वसीअ काम नज़र आता है। लेकिन अल्लाह तआला ने इस सब के बावजूद हमारे सपुर्द यह काम किया हुआ है और यह भी अल्लाह तआला का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से वादा है लेकिन आप ने फ़रमाया ये सब काम जो किए जा रहे हैं यह तो हमारी मामूली कोशिश है। इस के साथ असल में तो दुआओं की ज़रूरत है, दुआओं से ये काम होने हैं।

अतः इस अहम बात को हमें हमेशा पेश-ए-नज़र रखना चाहिए कि दुआओं की तरफ़ तवज्जा दें और मसाजिद का निर्माण भी इसलिए होती है कि इस में इबादत के लिए लोग जमा हों। पाँच वक़्त अल्लाह तआला के हुज़ूर हाज़िर हों। जुम्मों में बाक़ायदगी इख़्तेयार करें। दुनिया के खेल कूद और कामों में अपनी इबादतों को न भूल जाएं। अगर हम अपनी इबादतों को भूल गए तो ये मस्जिद बनाना केवल एक ज़ाहिरी ढांचा खड़ा करना है। दुनिया को हम बता रहे होंगे कि यहां मुस्लमानों की एक मस्जिद बन गई है, लेकिन हमारे अमल अल्लाह तआला के नज़दीक इस क़ाबिल नहीं होंगे कि इस मस्जिद की बरकात से फ़ैज़ पाने वाले हों या हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मददगारों में से हूँ। आप अलैहिस्सलाम ने तो फ़रमाया है कि नियमित दुआओं से मेरे मददगार बनों, ताकि हम अल्लाह तआला के फ़ज़लों को जल्द से जल्द पूरा होता देखें।

अतः आज हम में से प्रत्येक का काम है कि मक़बूल दुआओं के लिए अपनी इबादतों को ज़िंदगियों का हिस्सा बना लें। अपने बच्चों को भी इबादत की आदत डालें। अल्लाह तआला के बताए हुए तरीक़ के मुताबिक़ अपनी नमाज़ों को सँवार कर अदा करें। ख़ालिस हो कर अल्लाह तआला के आगे झुकें और इस से मज़ीद फ़ुतूहात की भीख मांगें। कितने ख़ुश-क़िस्मत होंगे हम में से वे जिनको यह सब कुछ हासिल हो जाए और फिर वे अल्लाह तआला के फ़ज़लों की बारिश बरसता देखें।

अगर हम अपनी इबादतों के मयार बुलंद करेंगे, दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करेंगें तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ अल्लाह तआला के जो वादे हैं उन्हें अपनी ज़िंदगियों में पूरा होते देखेंगे।

अतः हमें अपनी हालतों की तरफ़ तवज्जा करने की ज़रूरत है। इन तरक़्क़ी प्राप्त देशों में आकर दुनिया में न खो जाएं। अब पिछले कुछ समय से नए असायलम सीकर भी यहां आए हैं अतः दुनिया में न डूब जाएं। यहां प्रत्येक तामीर होने वाली मस्जिद एक नया जोश और वलवला और अल्लाह तआला से ताल्लुक़ हमारे अंदर पैदा करने वाली होनी चाहिए। अल्लाह तआला ने तो अपने वादे पूरे फ़रमाने हैं। यह न हो कि हमारे अम्लों की वजह से उनके पूरा होने का वक़्त दूर हो जाए या वे किसी और के माध्यम से, बाद में आने वाले लोगों के ज़रीया से पूरे हों और हम वंचित रह जाएं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अल्लाह तआला का इस्लाम की फ़तह का वादा था और अल्लाह तआला को आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्यारा कौन नबी हो सकता था और है लेकिन क्या इस के बावजूद जंग बदर के अवसर पर आप की रो रो की जाने वाली दुआ, विनम्रता, ख़ौफ़, ख़शीयत और दुआ एक अज़ीम मुक़ाम पर नहीं पहुंची हुई थी? इस क़दर गिरया-ओ-ज़ारी थी कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की चादर बार-बार कंधे से उतर जाती थी और फिर जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! फ़तह-ओ-नुसरत का अल्लाह तआला का वादा है तो फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर इस क़दर बेचैनी का क्यों इज़हार फ़र्मा रहे हैं? इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

अल्लाह तआला बेनयाज़ है। फ़ुतूहात में भी मख़फ़ी शरायत होती हैं इसलिए मेरा काम निहायत विनय से अल्लाह तआला से उसकी मदद माँगना है।

(उद्धरित मलफ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 11)

और फिर दुश्मन के मुख़्तलिफ़ अवसरों पर बार-बार हमलों और प्रत्येक तरह से नुक़्सान पहुंचाने के बावजूद कुछ सालों के बाद ही अल्लाह तआला ने जो फ़तह दी इस जैसी फ़तह अज़ीम न तारीख़ ने देखी न सुनी कि जान के दुश्मन न सिर्फ मुस्लमान हो गए बल्कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आशिक़ बन गए, अपनी जानें आप पर निछावर करने की अमली तस्वीर बन गए। दुनिया पर यह साबित कर दिया कि कोई दुश्मन हमारी लाशों पर से गुज़रे बग़ैर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक नहीं पहुंच सकता और जिनकी क़िस्मत में ज़िल्लत-ओ-रुस्वाई लिखी थी, उन्हें अल्लाह तआला ने तबाह-ओ-बर्बाद कर दिया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि वह फ़ानी फ़ी अल्लाह की दुआएं ही थीं जो यह इन्केलाब लाएंगे।

(उद्धरित बर्कातुद दुआ, रुहानी खज़ायन भाग 6, पृष्ठ 11)

अतः आज भी फ़ानी फ़ी अल्लाह के गुलाम-ए-सादिक़ की दुआएं ही हैं जो अपने वक़्त पर पूरी हो कर दुनिया को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़दमों के नीचे लाएँगी लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया तुम जो मेरी तरफ़ मंसूब होते हो अपनी दुआओं और अपने अमल से मेरी मदद करो।

आज हम इस मस्जिद में बैठे हैं, इस का उद्घाटन कर रहे हैं, इस का नाम भी 'फ़तह-अज़ीम' मस्जिद रखा है और यह नाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इलहाम

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ
KHALEEL AHMAD
S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

और भविष्यवाणी के हवाले से रखा गया है। आप अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से सूचना पा कर डोई की हलाकत की भविष्यवाणी फ़रमाई थी और आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि यह निशान जिस में फ़तह अज़ीम होगी अनक़रीब ज़ाहिर होगा। (उद्धरित हक़ीकतुल वह्यी, रुहानी ख़ज़ाएन भाग 22 पृष्ठ 511 हाशिया) और दुनिया ने देखा कि पंद्रह बीस दिन के अंदर ही अल्लाह तआला ने उसे हलाक कर दिया और बड़ी ज़िल्लत से हलाक कर दिया। इस से पहले अल्लाह तआला ने इस से क्या सुलूक किया वह एक अलैहदा तफ़सील है। बहरहाल उसकी हलाकत के निशान को अल्लाह तआला से इत्तिला पा कर आप फ़तह अज़ीम क़रार दिया और आज उसका अगला क़दम है जो इस शहर में हम मस्जिद का उद्घाटन कर रहे हैं। आप इलहाम के एक हिस्सा को हमने तक़रीबन एक सौ पंद्रह साल पहले पूरा होते देखा और इस का अगला क़दम हम आज पूरा होते देख रहे हैं। एक सौ पंद्रह बीस साल पहले उस वक़्त के अख़बारों ने जो दुनियावी अख़बार हैं उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के चैलेंज को अपने अख़बारों में जगह दी और फिर उसकी हलाकत की भी ख़बर दी। अतः ये ख़ुदा तआला का निशान था जिसे दुनिया ने माना। एक अख़बार के कुछ हिस्सा का में यहां वर्णन कर देता हूँ, ज़्यादा तो नहीं हो सकता। 23 जून 1907 ई. के The sunday herald boston ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का परिचय लिखा। फिर आप का दावा और चैलेंज लिखा। फिर डोई के हवाले से लिखा। इसी अख़बार के कुछ शब्द मैं पेश कर देता हूँ। वह कहता है, उसने हेडिंग यह जमाया। अज़ीम है मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद जो मसीह है जिन्हों ने डोई के इबरतनाक अंजाम की ख़बर दी और अब वह ताऊन सेलाब और ज़लज़ले की भविष्यवाणी कर रहे हैं। यह कहता है कि अगस्त के तेईस दिन गुज़रे थे जब क़ादियान हिन्दुस्तान के मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद ने एलैगज़ेंडर डोई जो ईलिया सानी कहलाता था, उसकी मौत की ख़बर दी जो पिछले मार्च में पूरी हो गई। फिर कहता है कि यह इंडियन आदमी दुनिया के मशरिक़ी इलाक़ों में कई सालों से शौहरत रखता है। इस का दावा है कि आख़िरी ज़माने में जिस सच्चे मसीह ने आना था वह मैं हूँ और ख़ुदा तआला ने उसे इज़्ज़त बख़शी है। अमरीका में पहली दफ़ा उस वर्णन 1903 ई. में हुआ जब ईलिया सोम के साथ उसका झगड़ा मंज़र-ए-आम पर आया। डोई की वफ़ात के बाद से इंडियन नबी ने शौहरत की बुलंदियों को छुआ है क्योंकि उसने डोई की वफ़ात का बताया था कि उसकी यानी मिर्ज़ा साहिब की ज़िंदगी में ही निहायत दुख और तकलीफ़ के साथ उसकी वफ़ात हो जाएगी। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तरफ़ से उसने लिखा है कि मिस्टर डोई अगर मेरी दरख़ास्त मुबाहला स्वीकार करेगा और सराहतन या इशारतन मेरे मुक़ाबले पर खड़ा होगा, तो मेरे देखते देखते बड़ी हसरत और दुख के साथ इस दुनिया-ए-फ़ानी को छोड़ देगा।

फिर कहता है, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तरफ़ से लिख रहा है कि देखो अगर मिस्टर डोई इस मुक़ाबले से भाग गया तो आज मैं समस्त अमरीका और यूरोप के बाशिंदों को इस बात पर गवाह करता हूँ कि यह तरीक़ उसका भी शिकस्त की सूरत समझी जाएगी और तथा इस सूरत में पब्लिक को यक़ीन करना चाहिए कि ये समस्त दावा उसका इलयास बनने का केवल ज़बान का झूठ और फ़रेब था और जबकि वह इस तरह मौत से भागना चाहेगा, लेकिन दरहक़ीक़त ऐसे भारी मुक़ाबले से गुरेज़ करना भी एक मौत है। अतः यक़ीनन समझो कि उसके सीहोन पर जल्द तर एक आफ़त आने वाली है क्योंकि इन दोनों सूरतों में से ज़रूर एक सूरत उसे पकड़ लेगी। अब मैं इस मज़मून को इस दुआ पर ख़त्म करता हूँ कि हे क़ादिर और कामिल ख़ुदा जो हमेशा नबियों पर ज़ाहिर होता रहा है और ज़ाहिर होता रहेगा, यह फ़ैसला जल्द कर कि पिगट और डोई का झूठ लोगों पर ज़ाहिर कर दे क्योंकि इस ज़माने में तेरे आजिज़ बंदे अपने जैसे इन्सान की प्रसतिश में गिरफ़्तार हो कर तुझ से बहुत दूर जा पड़े हैं।

फिर अख़बार लिखता है कि शुरू में डोई ने मशरिक़-ए-बईद की तरफ़ से इस चैलेंज पर कोई अवामी तवज्जा नहीं दी। लेकिन 26 सितंबर 1903 ई. को उसने अपने ज़ायन सिटी पब्लिकेशन में कहा कि लोग बाअज़ दफ़ा मुझसे कहते हैं कि तुम इस तरह की चीज़ों का जवाब क्यों नहीं देते। कहता है क्या तुम समझते हो कि मुझे उन मक्खीयों और मच्छरों का जवाब देना चाहिए। अगर मैं अपने पांव उन पर रख दूं तो उन्हें कुचल दूं। मैं उन्हें अवसर देता हूँ कि उड़ जाएं और ज़िंदा रहें। सिर्फ एक दफ़ा उसने किसी भी तरह से यह ज़ाहिर किया कि उसे मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद के वजूद का इलम है। उसने मिर्ज़ा साहिब का बेवक़ूफ़ मुहम्मदी मसीह के नाम से वर्णन किया। नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं)। और 12 दिसंबर 1903 ई. को वह लिखता है अगर मैं ख़ुदा का नबी नहीं हूँ तो ख़ुदा की ज़मीन में और कोई भी नहीं। इसके बाद आने वाले जनवरी में उसने लिखा कि मेरा काम यह है कि लोगों को मशरिक़, मग़रिब, शुमाल और जुनूब से बाहर निकालना है और उन्हें इस और दूसरे सीहोन शहरों में आबाद करना है उस वक़्त तक जब तक मुस्लमानों का ख़ातमा नहीं हो जाता। अल्लाह हमें वह वक़्त दिखाए। यह इस डोई ने लिखा जबकि मिर्ज़ा साहिब ने उसे सख़्ती से चैलेंज किया।

अख़बार फिर लिखता है कि मिर्ज़ा साहिब ने सख़्ती से उसे चैलेंज किया कि अल्लाह से दुआ करो कि हम में से जो झूठा है वह पहले हलाक हो जाए। डोई इस हालत में मरा कि उस के दोस्त उसे छोड़ कर जाने लगे और क़िस्मत ख़राब हो गई। वह फ़ालिज और जुनून जैसे अमराज़ में मुबतला हो गया और उसे इबरतनाक मौत मिली।

इसके साथ सेहूनू शहर अंदरूनी मतभेदों के कारण तबाह-ओ-बर्बाद हो गया। मिर्ज़ा साहिब सामने आए हैं और उन्होंने वाज़ेह तौर पर वर्णन किया है कि वह चैलेंज या भविष्यवाणी जीत गए हैं और वे प्रत्येक सच्चाई के तालिब को सच्चाई क़बूल करने की दाअवत देते हैं जैसा कि उन्होंने ऐलान किया है। वह इस आफ़त को जो उनके अमरी के मुख़ालिफ़ पर पड़ी ख़ुदाई इंतेक़ाम के साथ-साथ ख़ुदाई इन्साफ़ की दलील के तौर पर पेश करते हैं। जैसा कि एक अमल करने वाला अर्थात कोई अहमदी वर्णन करता है कि दुश्मन के मरने पर ख़ुशी नहीं करनी चाहिए कि हम डोई की ज़िंदगी के कुछ विशेष हालात की तरफ़ इशारा करें। इस तरह की चीज़ें हमारे दिमाग़ों में बहुत दूर हैं। हम इन हक़ायक़ को अपने उद्देश्य के लिए और मज़ीद सच्चाई के इज़हार के लिए प्रकाशित करते हैं। इस में कोई शक नहीं कि इस्लाम का मुक़द्दस मज़हब मर्दों की बुराई करने की तालीम नहीं देता लेकिन इस का यह मतलब भी नहीं है कि हक़ायक़ को इस वक़्त छिपा लिया जाए जब उनका ज़ाहिर करना मुआशरे के हक़ में और इन्सानियत, सच्चाई और ख़ुदा की ख़ातिर हो। फिर अहमदी के हवाले से ही लिखता है कि डोई पर मसायब नाज़िल करके और अंततः उसकी बेवक़त मौत के सबब ग़म और अज़ाब नाज़िल करके ख़ुदा तआला ने अपना फ़ैसला सुना दिया है जैसा कि उसने अपने रसूल को इस वाक़िया के वक़ूअ होने से तीन चार साल पूर्व बता दिया था।

(sunday herald-boston june 23, 1907-magazine section)

यह एक अख़बार का नमूना है जो मैंने पेश किया है। निसंदेह यह फ़तह थी और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई पर दलील भी थी और है लेकिन जैसा कि मैंने कहा आप अलैहिस्सलाम का मिशन तो बहुत वसीअ है। यह तो एक महाज़ की एक जगह की फ़तह का वर्णन है।

हमारी हक़ीक़ी ख़ुशी तो उस वक़्त होगी, जब हम दुनिया को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़दमों के नीचे लाएँगे। इस के लिए हमें अब इस मस्जिद के बनने के साथ तब्लीग़ के नए रास्ते तलाश करने होंगे।

मसीह मुहम्मदी के दलायल को दुनिया के सामने पेश करना होगा। पहले से बढ़कर अपनी अमली और रुहानी हालत को बेहतर बनाना होगा। जैसा कि मैंने कहा असल फ़तह अज़ीम तो फ़तह मक्का थी। क्या फ़तह मक्का के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और ख़ुलफ़ा-ए राशेदीन ने या बाद के मुस्लमानों ने तब्लीग़ के काम को रोक दिया था? क्या इस्लाम के पैग़ाम को दुनिया के किनारों तक पहुंचाने की भरपूर कोशिश नहीं की थी? जंगों से इलाक़े फ़तह नहीं किए थे? हाँ जंगें भी हुईं लेकिन इसलिए नहीं कि दीन फैले बल्कि दिल जीते थे जिससे क़ुर्बानी करने वाले लोग गिरोह दर गिरोह इस्लाम में शामिल होते चले गए। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा हासिल होने वाली फ़तह को मुस्तक़िल तब्लीग़ और दुआओं से दायमी करने की ज़रूरत है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने वालों का शुमार इन आखेरीन में

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

होता है जो पहलों से मिले। तो क्या पहलों ने तब्लीग़ रोक दी थी? अपनी रुहानी और अख़लाक़ी हालतों में बेहतरी रोक दी थी? इबादतों के मयार कम कर दिए थे? जब तक ये चीज़ें मुस्लमानों में रहें इस्लाम तरक़्क़ी करता रहा और मुस्लमानों पर ज़वाल उस वक़्त आना शुरू हुआ जब दुनिया ग़ालिब आने लगी और तक़्वा के मयार गिरने शुरू हो गए। इबादतों की तरफ़ तवज्जा कम होती चली गई लेकिन क्योंकि यह भी अल्लाह तआला का आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से वादा था कि क़ियामत तक इस दीन को क़ायम रखना है और मज़बूती अता फ़रमानी है इसलिए आख़िरी ज़माने में मसीह मौऊद और मह्दी माहूद को भेजेगा और फिर मसीह मौऊद को भेजा और आप दुनिया को अपने आने की ख़बर दी और बावजूद वसायल न होने के यूरोप और अमरीका और दुनिया के कई मुल्कों में आपका पैग़ाम पहुंचा और डोई के हवाले से हम देख ही रहे हैं कि किस शान से पहुंचा। आप अलैहिस्सलाम के द्वारा अल्लाह तआला ने जो इस्लाम की पुनः प्रसार का बीच बोया था वह एक शान से दुनिया में फैलता फूलता चला जा रहा है। अल्लाह तआला ने आप से बेशुमार वादे फ़रमाए हैं। आपको फ़रमाया : ख़ुदा ऐसा नहीं जो तुझे छोड़ दे। ख़ुदा तुझे ग़ैरमामूली इज़्ज़त देगा। लोग तुझे नहीं बचाएँगे पर मैं तुझे बचाऊंगा। (उद्धरित ईज़ाला औहाम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 3, पृष्ठ : 442)

और इस तरह के बेशुमार वादे हैं जो अल्लाह तआला ने आप अलैहिस्सलाम से किए और जमाअत की एक सौ तेंतीस साला तारीख़ इस बात पर गवाह है कि किस तरह अल्लाह तआला अपने वादे पूरे फ़रमाता चला जा रहा है। आज जो जमाअत के 220 देशों में फैली हुई है यह अल्लाह तआला का काम है कि उसने इस पैग़ाम को पहुंचाने के सामान फ़रमाए हैं और दुनिया आज मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम को मसीह मौऊद और मह्दी माहूद के तौर पर जानती है। आप ने प्रत्येक मुख़ालिफ़ को मुक़ाबिल पर बुलाया और उसे राह-ए-फ़रार इख़्तेयार करने के इलावा चारा न रहा या अल्लाह तआला ने उसे तबाह-ओ-बर्बाद कर दिया। हाँ अम्बिया की जमाअतों की मुख़ालफ़तें जारी रहती हैं लेकिन दुश्मन जो चाहता है वह हासिल नहीं कर सकता।

यही जमाअत अहमदिया के साथ हो रहा है। कौन सा ज़ोर है जो दुश्मन ने पूरे वसायल और ताक़तों के साथ जमाअत को ख़त्म करने के लिए नहीं लगाया और अब भी लगा रहे हैं। कमज़ोर ईमान इस से ठोकर भी खाते हैं लेकिन एक जाता है तो अल्लाह तआला हज़ारों अता फ़रमाता है।

अतः अगर हमें इख़लास का दावा है। हम यह ऐलान करते हैं कि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम वही मसीह मौऊद और मह्दी माहूद हैं जिनके आने की भविष्यवाणी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाई थी, तो फिर हमें अपनी तमाम-तर सलाहियतों के साथ इस मसीह-ओ-मह्दी का मददगार बनना होगा। वह नमूना दिखाना होगा जो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने दिखाया।

हमने मुस्लमानों को भी दीन-ए-वाहिद पर जमा करके उनके अंदर से समस्त बिदआत को ख़त्म करना है और ग़ैर मुस्लिमों को भी इस्लाम की ख़ूबसूरत तालीम से अवगत करवा कर, उन्हें ख़ुदा ए वाहिद की इबादत करने वाला और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेजने वाला बनाना है तभी हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का हक़ अदा कर सकते हैं अन्यथा हमारे बैअत के दावे खोखले हैं। इसके हुसूल के लिए हमें अपनी इबादतों के मयार ऊंचे करने होंगे अन्यथा मस्जिदें बनाना तो बे-मक़्सद है और यह तभी हो सकता है जब हम अपनी ज़िंदगी के उद्देश्य को पहचानें। ज़िंदगी का मक़सद क्या है? हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि इन्सान अपनी ज़िंदगी का उद्देश्य ख़ुद निर्धारित नहीं कर सकता। यह ख़ुदा है जिसने इन्सान को पैदा किया है और अल्लाह तआला फ़रमाता है कि وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ (अल् ज़ारियात : 57) अर्थात मैंने जिन-ओ-इनस को इबादत के लिए पैदा किया है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस आयत की बेशुमार मुक़ामात पर वज़ाहत फ़रमाई है। एक अवसर पर आप इस तरह वज़ाहत फ़रमाते हैं : "असल ग़रज़ इन्सान के ख़लक़त की यह है कि वह अपने रब को पहचाने। और उसकी फ़रमांबर्दारी करे जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया مَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ मैंने जिन और इनस को इस लिए पैदा किया है कि वह मेरी इबादत करें मगर अफ़सोस की बात है कि अक्सर लोग जो दुनिया में आते हैं बालिग़ होने के बाद बजाय इस के कि अपने फ़र्ज़ को समझें और अपनी ज़िंदगी की ग़रज़ और ग़ायत को मद्द-ए-नज़र रखें वे ख़ुदा तआला को छोड़कर दुनिया की तरफ़ मायल हो जाते हैं और दुनिया का माल और उस की इज़्ज़तों के ऐसे दिलदादा होते हैं कि ख़ुदा का हिस्सा बहुत ही थोड़ा होता है और बहुत लोगों के दिल में तो होता ही नहीं। वह दुनिया ही में मुनहमिक और फ़ना हो जाते हैं। उन्हें ख़बर भी नहीं होती कि ख़ुदा भी कोई है। हाँ उस वक़्त पता लगता है जब क़ाबिज़-ए-अर्वाह आकर जान निकाल लेता है।" (मल्फ़ूज़ात, भाग 7, पृष्ठ 177-178 ऐडीशन 1984 ई.) जब मौत का वक़्त आ जाता है। हम जो ज़माने के इमाम को मानने का दावा करते हैं हमारा तो यह काम नहीं कि इस तरह ज़िंदगी गुज़ारें। हमें तो इस ज़िंदगी के मक़सद को पहचानने की कोशिश करते हुए इबादत का हक़ अदा करना चाहिए। इस ख़ूबसूरत मस्जिद की तरफ़ लोगों की तवज्जा तभी पैदा होगी, तभी हम इस्लाम का पैग़ाम हक़ीक़ी रंग में आगे पहुंचा सकेंगे, तभी हम मसीह मौऊद के मिशन को पूरा कर सकेंगे जब हम अपनी कोशिशों को अल्लाह तआला की मदद से हासिल करने की कोशिश करें और यह उस वक़्त तक नहीं हो सकता जब तक हम अपनी इबादतों के हक़ अदा करने वाले न हों। अतः प्रत्येक अहमदी इस पर सोचे और इस को अपनी ज़िंदगी का हिस्सा बनाने की कोशिश करे कि उसकी इबादत के हक़ अदा करने हैं ताकि अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को जज़ब करते हुए अपनी दुनिया-ओ-आक़िबत संवारने वाले बन सकें।

अतः आज इस मस्जिद का उद्घाटन अज़ीम तब बने गाजब हम इस हक़ीक़त को पहचान लें कि हमारी ज़िंदगी का उद्देश्य क्या है वर्ना दुनिया में बेशुमार मस्जिदें हैं जो ख़ूबसूरत हैं। बहुत आला हैं लेकिन वहां आने वाले अपने जन्म के उद्देश्य को पूरा करने वाले नहीं। इबादत सिर्फ इतनी नहीं कि जल्दी जल्दी पाँच नमाज़ें या चंद नमाज़ें ठूंगे मार कर पढ़ लें बल्कि इबादत यह है कि जो नमाज़ का हक़ है वह अदा किया जाए। उसे सँवार कर पढ़ा जाए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक शख़्स को तीन चार मर्तबा, बार-बार नमाज़ पढ़ने का इसलिए इरशाद फ़रमाया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के नज़दीक वह नमाज़ का हक़ अदा नहीं कर रहा था और जिस तरह सँवार कर नमाज़ पढ़नी चाहिए उस तरह नहीं पढ़ रहा था।

(सही बुख़ारी, كتاب الاذان باب وجوب القراءة للامام ... हदीस : 757)

अतः नमाज़ों को भी उसका हक़ अदा करते हुए अदा करें तो फिर अल्लाह तआला का क़ुरब भी हमें मिलता है और इसी तरह इबादतों की मक़बूलियत तब होती है जब अल्लाह तआला के बंदों का भी हक़ अदा किया जा रहा हो। जो लोगों के हक़ मारने वाले हैं अल्लाह तआला फ़रमाता है उनकी नमाज़ें उनके लिए हलाकत का सामान हैं वे उनके मुँह पर मारी जाएँगी। अतः हमारा उद्देश्य मस्जिदों को आबाद करना और अल्लाह तआला के हुक्मों पर चलते हुए आबाद करना है और अल्लाह तआला की रज़ा के हुसूल के लिए अदा करना है और होना चाहिए।

जिस शख़्स को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने चैलेंज दिया था, वह क्या चाहता था? वह दीन के नाम पर दुनिया में अपनी हुकूमत चाहता था। इस के लिए उसने मसीह अलैहिस्सलाम का नाम प्रयोग किया। बड़े दावे किए कि वह मसीह मुहम्मदी के साथ यह कर देगा वह कर देगा जैसा कि मैंने एक अख़बार के हवाले से वर्णन किया है। और जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसे दुआ का चैलेंज दिया तो फिर उस का अंजाम ज़ाहिर हो गया। दुनिया ने प्रत्येक तरह से डोई की ज़िल्लत-ओ-रुस्वाई देखी। इतना वाज़िह निशान ज़ाहिर हुआ कि अख़बारों ने भी एतराफ़ किया क्योंकि उसके बग़ैर चारा नहीं था और मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद को अज़ीम क़रार देने पर मजबूर हो गए, लेकिन क्या इस अज़ीम फ़तह की ख़ुशी में हम सिर्फ एक यादगार मस्जिद बना दें और ख़ुश हो जाएं। जैसा कि मैंने कहा है। हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं के फल खाए और खा रहे हैं लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने मानने वालों को भी उन्ही क़दमों पर चलने की तलक़ीन फ़रमाई है जो अल्लाह तआला से ताल्लुक़ पैदा करने के रास्ते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने चैलेंज सिर्फ़ हलाक करने के लिए नहीं दिया था बल्कि इस्लाम की अज़मत क़ायम करने के लिए दिया था, दुनिया को इस्लाम के झंडे तले लाने के लिए दिया था। इसलिए दिया था कि अब मसीह मुहम्मदी की हुकूमत दुनिया में क़ायम होनी है, जिसने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झंडे को बुलंद करते हुए ख़ुदा ए वाहिद की हुकूमत को दुनिया में क़ायम करना है।

अतः आज यह हमारा काम है जो यह दावा करते हैं कि हम मसीह मौऊद आकी जमाअत में शामिल हुए हैं कि मसीह मुहम्मदी के पैग़ाम को मुल्क के कोने कोने में

फैला दें। यह हमारा काम है। ख़ुदा तआला की वहदानियत उन पर साबित करें और यह काम उस वक़्त होगा जब हम अपना भी ख़ुदा तआला से ताल्लुक़ पैदा करेंगे। तक़्वा में बढ़ेंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "हमारी जमाअत के लिए ख़ासकर तक़्वा की ज़रूरत है। विशेषता इस ख़्याल से भी कि वह एक ऐसे शख़्स से ताल्लुक़ रखते हैं जिसका दावा मामूरियत का है ता वे लोग जो ख़ाह किसी किस्म के घृणा, द्वेष या शिर्कों में मुबतला थे या कैसे ही रुबा दुनिया थे इन समस्त आफ़ात से निजात पावें।"

(मलफ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 10 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः अपनी अंदरूनी सफ़ाई भी बहुत ज़रूरी है और जब यह अंदरूनी सफ़ाई होगी तो तक़्वा पैदा होगा तो फिर दुनिया देखेगी कि निशानात पर निशानात ज़ाहिर होते चले जाऐंगे और यही वह मुक़ाम है जहां फ़ुतूहात के मज़ीद रास्ते खुलते चले जाऐंगे। इंशा-ए-अल्लाह। और यही वे हालत है कि फ़तह-ए-अज़ीम की हक़ीक़त को भी हम देखेंगे। अतः हे मसीह मुहम्मदी के ग़ुलामों प्रत्येक फ़तह का निशान हमारे अंदर एक इन्केलाब पैदा करने वाला होना चाहिए। अतः यह अह्द करें कि आज का दिन हमारे अंदर एक रुहानी इन्केलाब लाने का दिन होगा।

हमारे बच्चों के लिए, हमारी नसलों के लिए भी रुहानी इन्केलाब लाने का दिन होगा और होना चाहिए अन्यथा डोई की हलाकत से या उस शहर के लोगों की डोई के नाम से अदम वाक़फ़ीयत से हमें क्या फ़ायदा पहुंच सकता है कि हमने उनको परिचित करा दिया ये जानते नहीं थे। फ़ायदा तो तभी है जब इस फ़तह अज़ीम की भविष्यवाणी के पूरा होने से हमारे अंदर भी एक इन्केलाब पैदा हो, एक इन्केलाब अज़ीम पैदा हो और हमारे वतन वाले भी और दुनिया भी हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी का जुआ अपनी गर्दन पर डाल ले। ख़ुदा तआला की वहदानियत के क़ायल हो जाए और इस के लिए प्रत्येक क़ुर्बानी करने के लिए तैयार हो जाए।

अल्लाह तआला हमें और हमारी नसलों को यह मुक़ाम हासिल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मल्-फ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमअः और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमअः प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना सम्भव न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(सम्पादक)

★ ★ ★

पृष्ठ 02 का शेष

तो उस वक़्त सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु बहुत जोश में थे। इसका वर्णन करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने लिखा है। कि "मुस्लमान यह नज़ारा देख रहे थे और मज़हबी ग़ैरत से उनकी आँखों में ख़ून उतर रहा था परन्तु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने सहम कर ख़ामोश थे। आख़िर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से न रहा गया। वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़रीब आए और काँपती हुई आवाज़ में फ़रमाया क्या आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़दा के बरहक़ रसूल नहीं? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हाँ हाँ ज़रूर हूँ। उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि क्या हम हक़ पर नहीं और हमारा दुश्मन बातिल पर नहीं? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हाँ हाँ ज़रूर ऐसा ही है। उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा तो फिर हम अपने सच्चे दीन के विषय में यह ज़िल्लत क्यों बर्दाश्त करें? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की हालत को देख कर मुख़्तसर शब्दों में फ़रमाया। देखो उमर! मैं ख़ुदा का रसूल हूँ और मैं ख़ुदा की मंशा को जानता हूँ और इस के ख़िलाफ़ नहीं चल सकता और वही मेरा मददगार है। परन्तु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की तबीयत का तलातुम क्षण क्षण बढ़ रहा था। कहने लगे क्या आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हम से यह नहीं फ़रमाया था कि हम बैतुल्लाह का तवाफ़ करेंगे? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हाँ मैंने ज़रूर कहा था मगर क्या मैंने यह भी कहा था कि यह तवाफ़ ज़रूर इसी साल होगा? उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि नहीं ऐसा तो नहीं कहा। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तो फिर इंतेज़ार करो तुम इन शा अल्लाह ज़रूर मक्का में दाख़िल होगे और काबा का तवाफ़ करोगे। परन्तु इस जोश के आलम में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की तसल्ली नहीं हुई लेकिन चूँकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़ास रोब था इस लिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के हां से हट कर हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आए और उन के साथ भी इसी किस्म की जोश की बातें कीं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी इसी किस्म के जवाब दिए जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दिए थे परन्तु साथ ही हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने नसीहत के रंग में फ़रमाया देखो उम्र! सँभल कर रहो और रसूल-ए-ख़ुदा की रिकाब पर जो हाथ तुमने रखा है उसे ढीला न होने दो क्योंकि ख़ुदा की क़सम यह शख़्स जिसके हाथ में हमने अपना हाथ दिया है बहरहाल सच्चा है।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि इस वक़्त मैं अपने जोश में यह सारी बातें कह तो गया परन्तु बाद में मुझे सख़्त नदामत हुई और मैं तौबा के रंग में इस कमज़ोरी के असर को धोने के लिए बहुत सी नफ़ली आमाल बजा लाया यानी सदक़े किए, रोज़े रखे, नफ़ली नमाज़ें पढ़ीं और ग़ुलाम आज़ाद किए ताकि मेरी इस कमज़ोरी का दाग़ धुल जाए।"

(सीरत खातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, पृष्ठ 767-768)

इस वाक़िया का वर्णन हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी वर्णन फ़रमाया है। आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "एक दफ़ा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वालही वसल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु को संबोधित करते हुए फ़रमाया कि मैंने तुमको बहुत हुक्म दीए परन्तु मैंने तुम से मुख़लिस तरीन लोगों के अंदर भी कई दफ़ा एहतेजाज की रूह देखी मगर अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो के अंदर मैंने यह रूह कभी नहीं देखी।"

इसलिए सुलह हुदैबिया के अवसर पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो जैसा इन्सान भी घबरा गया और वह इसी घबराहट की हालत में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में गए और कहा कि क्या हमारे साथ ख़ुदा का यह वादा नहीं था कि हम उमरा करेंगे? उन्होंने कहा कि हाँ ख़ुदा का वादा था। उन्होंने कहा कि क्या ख़ुदा का हमारे साथ यह वादा नहीं था कि वह हमारी ताईद और नुसरत करेगा? हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि हाँ था। उन्होंने कहा तो फिर क्या हमने उमरा किया?

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा उमर! ख़ुदा ने कब कहा था कि हम इसी साल उमरा करेंगे? फिर उन्होंने कहा कि क्या हमको फ़तह-ओ-नुसरत हासिल हुई? हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि ख़ुदा और उसका रसूल फ़तह-ओ-नुसरत के माने हमसे बेहतर जानते हैं मगर उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की इस

जवाब से तसल्ली न हुई और वह उसी घबराहट की हालत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुंचे और अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क्या ख़ुदा का हमसे यह वादा नहीं था कि हम मक्का में तवाफ़ करते हुए दाख़िल होंगे? आपने फ़रमाया हाँ। उन्होंने अर्ज़ किया कि क्या हम ख़ुदा की जमाअत नहीं और क्या ख़ुदा का हमारे साथ फ़तह-ओ-नुसरत का वादा नहीं था? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हाँ था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा तो या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! क्या हमने उमरा किया। आपने फ़रमाया कि ख़ुदा ने कब कहा था कि हम इसी साल उमरा करेंगे। यह तो मेरा ख़्याल था कि इस साल उमरा होगा। ख़ुदा ने तो कोई समय निर्धारित नहीं किया थी। उन्होंने कहा तो फिर फ़तह-ओ-नुसरत के वादा के क्या अर्थ हुए? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया नुसरत ख़ुदा की ज़रूर आएगी और जो वादा उसने किया है वह बहरहाल पूरा होगा। गोया जो जवाब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने दिया था वही जवाब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वालही वसल्लम दिया।''
(ख़ुतबात-ए-महमूद, भाग 20 सफ़ा 382)

दोनों रिवायतों में सिर्फ फ़र्क़ यह है कि एक यह भी रिवायत है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पहले आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए फिर हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो के पास गए और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो वर्णन फ़रमाया है बात वही है लेकिन यह है कि पहले हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो के पास गए फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी है कि दो आदमियों ने एक दूसरे को बुरा-भला कहा। एक आदमी मुस्लमानों में से था और एक आदमी यहूद में से था। मुस्लमान ने कहा उसकी क़सम जिसने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को समस्त जहानों पर फ़ज़ीलत दी तो यहूदी ने कहा उसकी क़सम जिसने मूसा को समस्त जहानों पर फ़ज़ीलत दी। इस पर मुस्लमान ने अपना हाथ उठाया और यहूदी के मुँह पर थप्पड़ मारा। वह यहूदी नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास गया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बताया जो उसके और मुस्लमान के दरमयान मुआमला हुआ था तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस मुस्लमान को बुलाया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इससे उसके मुताल्लिक़ दरयाफ़त किया। उसने आपको बताया तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मूसा पर मुझे फ़ज़ीलत न दो। (सही अल् बुख़ारी, किताब الخصومات، باب ما یذکر فی الاشخاص والخصومة بین المسلم والیهود नंबर : 2411) इस हदीस की शरह में लिखा है कि जिस मुस्लमान ने यहूदी को थप्पड़ मारा था वह हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो थे।(उम्दतुल कारी, भाग 12 पृष्ठ 351 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001) यह बुख़ारी की रिवायत है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस वाक़िया को वर्णन करते हुए इस तरह फ़रमाया है कि "आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ग़ैर मज़ाहिब वालों के एहसासात का भी बेहद ख़्याल रखते थे। एक दफ़ा हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो के सामने किसी यहूदी ने कह दिया कि मुझे मूसा की क़सम जिसे ख़ुदा ने सब नबियों पर फ़ज़ीलत दी है। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे थप्पड़ मार दिया। जब इस वाक़िया की रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़बर मिली तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो से इन्सान को निंदा की।" डाँटा। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "ग़ौर करो मुस्लमानों की हुकूमत है रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर हज़रत मूसा को एक यहूदी फ़ज़ीलत देता है और ऐसी तर्ज़ से कलाम करता है कि हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो जैसे नर्म-दिल इन्सान को भी ग़ुस्सा आ जाता है और आप उसे तमांचा मार बैठते हैं मगर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन्हें डाँटते हैं और फ़रमाते हैं कि तुमने ऐसा क्यों किया। उसे हक़ है कि जो चाहे अक़ीदा रखे।" (तफ़सीर-ए- कबीर 6, पृष्ठ 531) अगर यह उसका अक़ीदा है तो वह बोल सकता है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो के इशक़-ओ-मुहब्बत का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि "हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो का ताल्लुक़ भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इश्क़िया था। जब आप मदीना में दाख़िल होने के लिए मक्का से निकले तो उस वक़्त भी आपका ताल्लुक़ आशिक़ाना था और जब आपकी वफ़ात का वक़्त आया तो उस वक़्त भी ताल्लुक़ आशिक़ाना था। इसलिए जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर اِذَا جَآءَ نَصۡرُ اللّٰهِ وَالۡفَتۡحُ ۙ وَرَاَيۡتَ النَّاسَ يَدۡخُلُوۡنَ فِىۡ دِيۡنِ اللّٰهِ اَفۡوَاجًا ۙ فَسَبِّحۡ بِحَمۡدِ رَبِّكَ وَاسۡتَغۡفِرۡهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ك की वह्यी क़ुरआनी नाज़िल हुई जिसमें मख़फ़ी तौर पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात की ख़बर थी तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुतबा पढ़ा और इस में इस सूरत के नुज़ूल का वर्णन फ़रमाया और फ़रमाया अल्लाह तआला ने अपने एक बंदा को अपनी रिफ़ाक़त और दुनयवी प्रगित में से एक के इंतेख़ाब की इजाज़त दी और उसने अल्लाह तआला रिफ़ाक़त को तर्जीह दी। इस सूरत को सुनकर सब सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु के चेहरे ख़ुशी से तमतमा उठे और सब अल्लाह तआला की तकबीर करने लगे और कहने लगे कि अलहमदु लिल्लाह अब ये दिन आ रहा है मगर जिस वक़्त बाक़ी सब लोग ख़ुश थे, हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो की चीख़ें निकल गईं और आप रज़ियल्लाहु अन्हो बे ताब हो कर रो पड़े और आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! आप पर हमारे माँ बाप और बीवी बच्चे सब क़ुर्बान हों। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिएए हम प्रत्येक चीज़ क़ुर्बान करने के लिए तैयार हैं।

गोया जिस तरह किसी अज़ीज़ के बीमार होने पर बकरा ज़बह किया जाता है इसी तरह हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी और अपने सब अज़ीज़ों की क़ुर्बानी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए पेश की।

आप रज़ियल्लाहु अन्हो के रोने को देखकर और इस बात को सुनकर कुछ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखो! कि इस बुड्ढे को क्या हो गया है। अल्लाह तआला ने किसी बंदे को इख़्तेयार दिया है कि ख़ाह वह रिफ़ाक़त को पसंद करे या दुनयवी तरक़्क़ी को। और उसने रिफ़ाक़त को पसंद किया। यह क्यों रो रहा है? इस जगह जो इस्लाम की फ़ुतूहात का वादा पेश किया जा रहा है यहाँ तक कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो जैसे जलीलुल क़दर सहाबी ने भी इसका इज़हार हैरत किया। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों के इस इस्तेजाब को महसूस किया और हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो की बेताबी को देखा और आप की तसल्ली के लिए फ़रमाया कि अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो मुझे इतने महबूब हैं कि अगर ख़ुदा तआला के सिवा किसी को ख़लील बनाना जायज़ होता तो मैं उनको ख़लील बनाता" फिर आगे फ़रमाया'' मगर अब भी यह मेरे दोस्त और सहाबी हैं। फिर फ़रमाया कि मैं हुक्म देता हूँ कि आज से सब लोगों के घरों की खिड़कियाँ जो मस्जिद में खुलती हैं बंद कर दी जाएं सिवाए अबू बकर की खिड़की के और इस तरह आपके इशक़ की आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दाद दी क्योंकि यह इशक़ कामिल था जिसने हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो को बता दिया कि इस फ़तह-ओ-नुसरत की ख़बर के पीछे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात की ख़बर है और आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी और अपने सब अज़ीज़ों की जान का फ़िद्या पेश किया कि हम मर जाएं मगर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जीवित रहें। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात पर भी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आला नमूना इशक़ का दिखाया। ग़रज़ हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ग़ार-ए-सौर में अपनी जान के लिए घबराहट का इज़हार नहीं किया बल्कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए किया और इसी लिए अल्लाह तआला ने उनको खासतौर पर तसल्ली दी।"(ख़ुतबात भाग 16, पृष्ठ 814-815 ख़ुतबा जुमा बयान फ़र्मूदा 18 अक्तूबर 1935 ई.) प्रत्येक मुक़ाम पर जहां भी इज़हार किया वहां आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इशक़ की वजह से किया।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु एक जगह फ़रमाते हैं कि "हदीसों में आता है कि एक दफ़ा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो की किसी बात पर तकरार हो गई। यह तकरार बढ़ गई। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की तबीयत तेज़ थी। इस लिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुनासिब समझा कि वह इस जगह से चले जाएं ताकि झगड़ा ख़्वाह-मख़ाह ज़्यादा न हो जाए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने जाने की कोशिश की तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आगे बढ़कर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का कुरता पकड़ लिया कि मेरी बात का जवाब देकर जाओ। जब हज़रत अबू बक़र

रज़ियल्लाहु अन्हो उस को छुड़ा कर जाने लगे तो आपका कुर्ता फट गया। आप वहां से अपने घर को चले आए लेकिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को शुबा पैदा हुआ कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास मेरी शिकायत करने गए हैं। वह भी पीछे पीछे चल पड़ेता कि में भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अपना उज़्र पेश कर सकूं लेकिन रास्ते में हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की नज़रों से ओझल हो गए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो यही समझे कि आप रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में शिकायत करने गए हैं। वह भी सीधे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में जा पहुंचे। वहां जा कर देखा तो हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो मौजूद न थे लेकिन चूँकि उनके दिल में नदामत पैदा हो चुकी थी इस लिए अर्ज़ क्या हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मुझसे ग़लती हुई कि मैं अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो से सख़्ती से पेश आया हूँ। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का कोई क़सूर नहीं मेरा ही क़सूर है। जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो को जा कर किसी ने बताया कि हज़रत उम्र और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आपकी शिकायत करने गए हैं। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो के दिल में ख़्याल पैदा हुआ कि मुझे भी अपनी बराअत के लिए जाना चाहिए ताकि यकतरफ़ा बात न हो जाए और मैं भी अपना नुक्ता-ए-नज़र पेश कर सकूं। जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मज्लिस में पहुंचे तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो अरज़ कर रहे थे कि या अल्लाह के रसूल! मुझसे ग़लती हुई कि मैंने अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो से तकरार की और उनका कुरता मुझ से फट गया। जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह बात सुनी तो ग़ुस्सा के आसार आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चेहरा पर ज़ाहिर हुए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : लोगो! तुम्हें क्या हो गया है जब सारी दुनिया मेरा इन्कार करती थी और तुम लोग भी मेरे मुख़ालिफ़ थे उस वक़्त अबू बक़र ही था जो मुझ पर ईमान लाया और प्रत्येक रंग में उसने मेरी मदद की।

फिर अफ़्सुर्दगी के साथ फ़रमाया क्या अब भी तुम मुझे और अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो को नहीं छोड़ते? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यही फ़र्मा रहे थे कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो अखिल हुए।"

इस की अगली तफ़सील हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो जब दाख़िल हुए तो उन्होंने क्या रवैय्या इख़्तेयार किया इस की तमहीद हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु बांध रहे हैं कि "यश होता है सच्चे इशक़ का उदाहरण कि बजाय यह कि बहाना करने के कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरा क़सूर नहीं था उमर का क़सूर था आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने जब देखा कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दिल में घुटन पैदा हो रही है आप रज़ियल्लाहु अन्हो सच्चे आशिक़ की हैसियत से यह बर्दाश्त नहीं कर सके कि मेरी वजह से रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तकलीफ़ हो। आते ही रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने घुटनों के बल बैठ गए और अर्ज़ क्या हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का क़सूर नहीं था मेरा क़सूर था। देखो हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो किस क़दर सच्चे आशिक़ थे कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो यह बर्दाश्त न कर सके कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो के माशूक़ के दिल को तकलीफ़ हो। आप यह देख कर कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो पर नाराज़ हुए हैं। "हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो इस पर ख़ुश नहीं हुए। आम तौर पर लोगों में यह आदत होती है कि जब वह अपने मद्द-ए-मुक़ाबिल को झाड़ देखतेहैं" डाँट पड़ती देखे तो ख़ुश होते हैं कि ख़ूब झाड़ पड़ी लेकिन इस सच्चे आशिक़ ने यह पसंद नहीं किया कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दिल को तकलीफ़ हो ख़ाह किसी वजह से हो। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा मैं मुजरिम बन जाता हूँ लेकिन मैं अपने माशूक़ का दिल रंजीदा नहीं होने दूँगा और निहायत विनम्रता से अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का क़सूर नहीं था मेरा क़सूर है।" हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "अगर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दिल के मलाल को दूर करने की ख़ातिर मज़लूम होने के बावजूद ज़ालिम होने का इक़रार करते हैं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दिल को तकलीफ़ न पहुंचे तो यह किस तरह हो सकता है कि एक मोमिन बंदा अपने ख़ुदा की ख़ुशनुदी के लिए वह काम न करे जो उसे ख़ुदा तआला की रज़ा के क़रीब कर दे।"

(ख़ुतबात-ए-महमूद, भाग 27 पृष्ठ 313 से 314)

मोमिन की भी यही निशानी है कि अल्लाह तआला की ख़ुशनुदी के लिए काम करे और कोई ऐसा काम न करे जिस से अल्लाह तआला नाराज़ हो। इस हवाले से अपनी मिसाल दी है।

फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु एक जगह फ़रमाते हैं "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो एक दफ़ा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास तौरात का एक नुस्ख़ा लेकर आए और कहने लगे कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह तौरात है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उन की बात सुनकर ख़ामोश हो गए परन्तु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने तौरात खोल कर उसे पढ़ना शुरू कर दिया। इस पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चेहरे पर नापसंदीदगी के आसार ज़ाहिर हुए।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह बात देखी तो वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो पर नाराज़ हुए और उन्होंने कहा क्या तुम्हें नज़र नहीं आता कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इसे बुरा मना हैं!

उनकी बात सुनकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को भी तवज्जा पैदा हुई और उन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चेहरा को देखा और जब उन्हें भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चेहरा पर नाराज़गी के आसार दिखाई दिए तो उन्होंने माज़रत की और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से माफ़ी तलब की।" (तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 6 पृष्ठ 253)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह वाक़िया एक आयत की तफ़सीर में बयान फ़रमाया है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नाराज़गी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के तौरात की इस आयत पढ़ने पर थी जो इस्लामी तालीम से विपरीत है, इस की वजह यह थी न यह कि तौरात क्यों पढ़ी। अगर किसी को इस की तफ़सीर पढ़ने में दिलचस्पी है तो तफ़सीर-ए-कबीर भाग 6 में सूरः नूर की आयत तीन के ज़िमन में इस की बाक़ी तफ़सील भी लिखी हुई है। वहां से देख सकते हैं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुताबअत सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु जिस तरह किया करते थे उसका सबूत हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो के एक वाक़िया से मिल सकता है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद जब कुछ क़बायल अरब ने ज़कात देने से इंकार कर दिया तो हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो उनके

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

ख़िलाफ़ जंग करने के लिए तैयार हो गए। इस वक़्त हालत ऐसी नाज़ुक थी कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो जीसे इन्सान ने मश्वरा दिया कि इन लोगों से नरमी करनी चाहिए परन्तु हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उत्तर दिया।

अबू क़हाफ़ा के बेटे की क्या ताक़त है कि वह इस हुक्म को मंसूख़ कर दे जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वालही वसल्लम ने दिया है। ख़ुदा की क़सम! अगर ये लोग रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में ऊंट का घुटना बाँधने की एक रस्सी भी ज़कात दिया करते थे तो मैं वह रस्सी भी उनसे लेकर रहूँगा और उस वक़्त तक दम नहीं लूँगा जब तक वे ज़कात अदा नहीं करते।"

यह बुख़ारी की रिवायत है। हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि "अगर तुम इस मुआमला में मेरा साथ नहीं दे सकते तो बेशक न दो। मैं अकेला ही उनका मुक़ाबला करूँगा। किस क़दर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुसरण है कि निहायत ख़तरनाक हालात में बावजूद इस के कि अकाबिर सहाबा लड़ाई के ख़िलाफ़ मश्वरा देते हैं फिर भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म को पूरा करने के लिए वे प्रत्येक किस्म का ख़तरा बर्दाश्त करने के लिए तैयार हो जाते हैं। इसी तरह लश्कर उसामा को रोक लेने के मुताल्लिक़ भी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने बहुत ज़ोर लगाया परन्तु हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि अगर दुश्मन इतना ताक़तवर हो जाए कि वे मदीना पर फ़तह पाए और मुस्लमान औरतों की लाशें कुत्ते घसीटते फिरें तब भी में इस लश्कर को जिसे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भिजवाने के लिए तैयार किया था रोक नहीं सकता।" (तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 8 पृष्ठ 108-109)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर मेरे पास बहरीन का माल आया तो मैं तुम्हें इतना इतना और इतना दूँगा। हाथ के इशारों से बताया। मगर वह माल उस वक़्त आया जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ौत हो गए थे। जब बहरीन का माल आया तो हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुनादी को हुक्म दिया, ऐलान करवाया और उसने ऐलान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़िम्मा जिसका कोई क़र्ज़ा या वादा हो वह हमारे पास आए। यह सुनकर यह कहते हैं कि मैं भी उनके पास गया और मैंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझ से ऐसा-ऐसा वादा फ़रमाया था तो हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने तीन लप भर कर दिए। अली बिन मुदीनी कहते थे कि सुफ़ियान दोनों हाथ इकट्ठे करके लप भरते कि यूँ उठा के तीन दफ़ा इस तरह दिया था। (सही अल् बुख़ारी, किताब فرض الخمس، باب ومن الدليل على ان الخمس لنوائب المسلمين हदीस नम्बर 3137 अनुवादक उर्दू, नज़ारत इशाअत रब्वः, भाग 5 पृष्ठ 485-486)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन किया कि जब बहरीन से माल आया तो मैंने हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो के मुनादी को यह आवाज़ देते हुए सुना कि जिस शख़्स से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कोई वादा किया हो तो वह आए। लोग हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आए तो वह उन्हें देते थे। फिर हज़रत अबू बशीर माज़नी रज़ियल्लाहु अन्हो आए। उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे बशीर! जब हमारे पास कुछ आए तो हमारे पास आना। इस पर हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने उन्हें दो या तीन लप भर कर दिया जिसको उन्होंने चौदह सौ दिरहम में पाया। (अल् तब्क़ातुल कुबरा लेइब्ने साद, ذكر من قضى دين رسول الله وعداته، भाग 2 पृष्ठ 243 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

लप का मतलब है कि दोनों हाथों से पूरा भर के।

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो से बात चीत में व्यस्त थे कि थोड़ी देर के बाद आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने ग़ुलाम से कहा कि पानी उलाओं। ग़ुलाम कुछ देर के बाद मिट्टी के बर्तन में पानी लाया। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने दोनों हाथों से बर्तन को पकड़ा और प्यास बुझाने के लिए अपने मुँह के क़रीब किया ही था कि आपने देखा कि बर्तन तो शहद से भरा हुआ है जिस में पानी भी मिला हुआ है। आप ने वे बर्तन रखवा दिया और वह पानी नहीं पिया। फिर ग़ुलाम की तरफ़ देखा और उससे पूछा कि यह किया है। ग़ुलाम ने कहा कि पानी में शहद मिलाया है। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो बर्तन की तरफ़ ग़ौर से देखने लगे।

चंद क्षण ही गुज़रे थे कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो की आँखों से आँसूओं का सेलाब बहने लगा। हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो हिचकियाँ बांध-बांध कर रोने लगे। रोते-रोते आप रज़ियल्लाहु अन्हो की आवाज़ और बुलंद हो गई और आप रज़ियल्लाहु अन्हो पर शदीद पीड़ा तारी हो गई।

लोग मुतवज्जा हुए और तसल्ली देने लगे कि हे ख़लीफ़ा रसूल! आपको क्या हो गया है। आप रज़ियल्लाहु अन्हो इस क़दर शदीद क्यों रो रहे हैं? हमारे माँ बाप आप पर फ़िदा हूँ आप सिसकियाँ भर कर क्यों रो रहे हैं लेकिन हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने रोना बंद न किया बल्कि आस-पास के समस्त लोगों ने भी आपको देखकर रोना शुरू कर दिया और रो-रो कर वह ख़ामोश भी हो गए लेकिन हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो मुसलसल रोते जा रहे थे। जब आपके आँसू ज़रा थमे तो लोगों ने आपसे रोने का कारण पूछा कि हे ख़लीफ़ा रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ये रोना कैसा है। आख़िर किस चीज़ ने आपको रुलाया। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने कपड़े के किनारे से आँसू पोंछते हुए और अपने आप पर क़ाबू पाते हुए फ़रमाया में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मौत के रोग के अंतिम दिनों में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास मौजूद था। मैंने आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा कि अपने हाथ से कुछ चीज़ दूर कर रहे हैं लेकिन वे चीज़ मुझे नज़र नहीं आ रही थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम कमज़ोर आवाज़ में फ़र्मा रहे थे कि मुझसे दूर हो जाओ, मुझसे दूर हो जाओ। मैंने इधर-उधर देखा मगर कुछ नज़र नहीं आया। मैंने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो वसल्लम! मैंने आपको देखा कि आप किसी चीज़ को अपने से हटा रहे थे जबकि आपके पास कुछ नज़र नहीं आ रहा था। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरी तरफ़ मुतवज्जा हो कर फ़रमाया यह दरहक़ीक़त दुनिया थी जो अपनी समस्त आराइश-ओ-नेअमत के साथ मेरे सामने आई थी। मैंने इस से कहा था कि दूर हो जाओ। एक कशफ़ी कैफ़ीयत आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर तारी हुई थी। अतः वह यह कहती हुई दूर हो गई कि अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझ से छुटकारा पा लिया तो क्या हुआ। जो लोग आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद आएँगे वे मुझसे कभी नहीं बच सकेंगे। हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने परेशानी में अपना सिर हिलाया और ग़म-ज़दा आवाज़ में लोगो! मुझे भी इस शहद से मिले पानी की वजह से डर लाहक़ हुआ कि कहीं इस दुनिया ने मुझे आ घेरा न हो इसलिए मैं सिसकियाँ भर कर रोया। (हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के100 क़िस्से, पृष्ठ 68 से 70 बैतुल उलूम लाहौर) (حلية الاولياء وطبقات الاصفياء، ذكر الصحابة من المهاجرين، अबू बकर सिदीक रज़ियल्लाहु अन्हो, भाग 1पृष्ठ 30-31मकतब ईमान मंसूर 2007 ई.) इतनी ख़शीयत थी अल्लाह तआला की।

फ़ुतूहात इराक़ में एक क़ीमती चादर हासिल हुई। हज़रत खालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने अहल-ए-लश्कर के मश्वरा से इस चादर को हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के पास बतौर तोहफ़ा भिजवाया और लिखा कि उसे आप ले लीजीए। आप रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए रवाना किया जा रहा है लेकिन हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे लेना गवारा नहीं फ़रमाया और न अपने रिश्तेदारों को दिया बल्कि उसे हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हो को प्रदान फ़र्मा दिया।

(सय्यदना सिद्दीक़ अकबरज़ियल्लाहु अन्हो शबे रोज़, पृष्ठ 107 مكتبة الايمان المنصورة 1437)

बाक़ी इन शा अल्लाह आइन्दा वर्णन होगा। इस वक़्त में दो मरहूमीन का वर्णन करना चाहता हूँ और बाद में उनका जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊं गा इन शा अल्लाह।

पहला है आदरणीय समीउल्लाह स्याल साहिब जो तहरीक-ए-जदीद में वकील खेती बाड़ी थे, नवासी (89) साल की आयु में बक़ज़ाए इलाही फ़ौत हुए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे। उनके पिता रहमतुल्लाह स्याल साहिब थे। समीउल्लाह स्याल साहिब के ख़ानदान में अहमदियत का नफ़ुज़ उनके पिता रहमतुल्लाह स्याल साहिब के ज़रीया हुआ था। उन्होंने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर में 1938 ई. में बैअत की थी। उस वक़्त समीउल्लाह स्याल साहिब की आयु चार साल की थी। जब बैअत का इलम उनकी माता को हुआ तो उन्होंने अपने पती को छोड़ दिया और उनको साथ लेकर चली गईं। जब यह वाक़िया हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो की

ख़िदमत में पेश हुआ तो हज़ूर सानी रज़ियल्लाहु अन्हो ने आपके वालिद साहिब से फ़रमाया कि आप मुक़द्दमा करें और बच्चा वापिस लें। इसलिए मुक़द्दमा कर के बच्चा वापस ले लिया गया। इस तरह आप अपने वालिद साहिब की कफ़ालत में आ गए और उन्होंने ही आपकी परवरिश की।

समीउल्लाह स्याल साहिब के पिता साहिब फ़सादाद के दौरान मशरिक़ी पंजाब में शहीद हो गए थे। इसके बाद आपके सब ग़ैर अहमदी रिश्तेदारों ने उनको वापिस लाने की कोशिश की, जमाअत से दूर हटाने की कोशिश की लेकिन आपने अहमदियत नहीं छोड़ी। 1949 ई. में तालीमुल इस्लाम हाईस्कूल से मैट्रिक की। 1954 ई. में तालीमुल इस्लाम कॉलेज से बी.ए की। फिर 1956 ई. में गर्वनमैंट कॉलेज लाहौर से एम.ए. स्टैटिस्टिक्स की। उनके दो बेटे हैं, एक कैनेडा में डाक्टर हैं और दूसरे इफ्तेख़ार स्याल साहिब तहरीक-ए-जदीद रब्वः में वाकिफ-ए-ज़िंदगी हैं। 1949 ई. में स्याल साहिब ने वक़्फ़ किया और दीगर वाकफ़ीन ज़िंदगी के साथ उनका टैस्ट हुआ, इंटरव्यू हुआ और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ुद पर्चा तर्तीब दिया। इसके बाद हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के इरशाद पर आपने मज़ीद तालीम के लिए तालीमुल इस्लाम कॉलेज लाहौर में दाख़िला लिया जहां से आपने पहले बी. एस.सी. और इसके बाद एम. एस.सी. स्टैटिस्टिक्स (statistics) की डिग्री हासिल की। 1953 ई. में आपका दफ़्तातिर में इबतेदाई तक़र्रुर हुआ। फिर मुख़्तलिफ़ दफ़्तातिर में काम करते रहे। 1960 से 63 ई. तक सिरालियून में ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। 1983 ई. में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे आपको वकील खेत बाड़ी और सनअत-ओ-तिजारत मुक़र्रर फ़रमाया। 88 से 99 ई. तक बतौर वकील दीवान और 99 ई. से 2012 ई. तक वकील खेती बड़ी और सनअत-ओ-तिजारत के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली और 2012 ई. से वफ़ात तक आप वकील खेती बाड़ी थे। उनका ख़िदमत का अरसा 69 वर्ष पर मुहीत है। इसके इलावा भी अंजुमन की और तहरीक की बहुत सारी कमेटियों के मैंबर थे और बाअज़ रजिस्टर्ड कंपनियों के डायरेक्टर थे। इसी तरह ख़ुद्दामुल अहमदिया में भी मुहतमिम के तौर पर उनको बड़ा लंबा अरसा मुख़्तलिफ़ शोबों में काम करने की तौफ़ीक़ मिली।

उनकी पत्नी अम्मुल हफ़ीज़ स्याल साहिबा कहती हैं कि चौंसठ साला अज़दवाजी ज़िंदगी में मैं ने देखा कि बहुत नेक, हमदर्द, मुतवक्किल, प्यार करने वाले थे। प्रत्येक काम में अपने पर दूसरे को तर्जीह देते थे और ख़लीफ़ा वक़्त के अहकामात को प्रत्येक बात पर तर्जीह देते थे। कहती हैं जब मेरी शादी हुई तो उन्होंने शुरू में ही मुझे यह बात समझा दी कि में एक वाकिफ-ए-ज़िंदगी हूँ और एक वाकिफ-ए-ज़िंदगी की बीवी भी वाकिफ-ए-ज़िंदगी होती है। फिर कहती हैं कि गरीबों का ख्याल रखते थे। मेहमान-नवाज़ी भी हमारे घर में बहुत ज़्यादा होती थी।

उनके बेटे इफ़्तिख़ारुल्लाह स्याल कहते हैं कि जमाअत से वफ़ादारी और मुहब्बत बचपन से ही उनमें बहुत ज़्यादा थी। 1947 ई. के फ़सादाद में जब उनके वालिद शहीद हो गए तो वह बिलकुल अकेले रह गए और जैसा कि बयान हुआ है उनके रिश्तेदारों में से केवल उनके पिता अहमदी थे और माता भी छोड़कर चली गई थीं। रिश्तेदारों ने उनको कहा कि तुम अहमदियत छोड़ दो हम तुम्हारे समस्त दुनियावी और तालीमी अख़राजात उठाएँगे लेकिन अहमदियत से मुहब्बत और अहमदियत की सच्चाई पर यक़ीन होने की वजह से उन्होंने जवाब दिया, कहा कि अगर मैं भूखा भी मर जाऊँगा फिर भी अहमदियत नहीं छोड़ूँगा और फिर हमेशा अपने इस ईमान पर क़ायम रहे। इस बात की शदीद ख़ाहिश थी कि वक़्फ़ का यह सिलसिला आगे इनकी नसल में भी जारी रहे। तो कहते हैं इसलिए जब मैंने वक़्फ़ किया तो बड़े ख़ुश हुए और यहां लंदन आए हुए थे तो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह को ख़ुद बताया। हज़रत ख़लीफ़ तुल मसीह राबे ने बड़ी ख़ुशी का इज़हार किया कि असल वक़्फ़ यही है कि यह सिलसिला आगे औलाद में भी जारी हो। दीनी दुनियावी मुश्किलात आती थीं तो ख़ुदा के आगे झुक जाते और इस मुश्किल के हल के लिए बहुत पुरसोज़ दुआएं करते।

फिर उनके एक बेटे लिखते हैं : मैं ने उन्हें पूरी ज़िंदगी तहज्जुद का एक भी नाग़ा करते हुए नहीं देखा। ग़रीबों की प्रत्येक मुम्किन इमदाद करने वाले थे। कहते हैं उनकी वफ़ात के बाद बहुत से लोगों ने मुझे से खासतौर पर ज़िक्र किया कि हमें जब कोई किसी किस्म की रक़म की ज़रूरत होती फ़ौरन स्याल साहिब के पास जाते और हमेशा वह हमारी इमदाद करते। बाज़-औक़ात घरों में कोई मसला दरपेश होता और जमाअती ख़िदमत का भी उस वक़्त अवसर होता तो उस वक़्त वे जमाअत के काम की तरफ़ निकल जाते और अपने घरेलू मसायल को अल्लाह के सपुर्द कर देते। उनके बेटे कहते हैं कि हमेशा मुझे जमाअत से मुहब्बत और ख़िलाफ़त का वफ़ादार रहने का दरस दिया और ख़लीफ़-ए-वक़्त की ज़बान से निकले प्रत्येक लफ़्ज़ पर बहुत हद तक यक़ीन था। इस सिलसिले में वह बयान करते थे कि जब इबतेदा में वक़्फ़ के सिलसिला में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो उस वक़्त अभी चर्चल इसी साल की उम्र में दुबारा वज़ीर-ए-आज़म बना था तो हज़रत ख़लीफ़ उल-मसीह सानी रहमहुल्लाह ने उनसे कहा कि अगर चर्चिल इसी साल की उम्र में वज़ीर-ए-आज़म बन सकता है तो तुम जमात की ख़िदमत इतने अरसा तक क्यों नहीं कर सकते। तो इस बात से कहते हैं मैंने उस वक़्त भी नतीजा निकाला था कि हम जितने भी लोग इस ग्रुप में शामिल वाक़िफ़ ज़िंदगी हैं, कम से कम अस्सी साल की उम्र तो हमारी ज़रूर होगी और अल्लाह तआला अस्सी साल तक ख़िदमत की तौफ़ीक़ देगा। इसलिए चौधरी हमीदुल्लह साहिब और मुस्लेउद्दीन साहिब उनके साथी थे, सबने अस्सी से ज़ायद उम्र पाई।

उनकी बहू कहती हैं कि मेरी छोटी उम्र में ही मेरे पिता की वफ़ात पा गए थे और सुसर के रूप में मुझे उनसे बाप का प्यार मिला। बाईस साल मैंने अपनी शादीशुदा ज़िंदगी में हमेशा उनसे शफ़क़त और बाप का प्यार ही देखा। अहमदियत के सच्चे शैदाई और ख़िलाफ़त से गहरी मुहब्बत करने वाले, ग़रीब पर्वर, मेहमान नवाज़, सच्चे इन्सान थे। उठते बैठते अल्लाह तआला का वर्णन करते। छोटी छोटी बातों पर शुक्र अदा करते। मेरे बच्चों की तर्बीयत में भी बहुत किरदार अदा किया। उन्हें क़ुरआन-ए-करीम का अनुवाद सीखने और कुतुब हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम पढ़ने की तरफ़ तवज्जा दिलाते रहे और फिर टैस्ट भी लेते थे। कहती हैं जब भी बच्चे दादा-जान के साथ बैठते तो हमेशा जमात की तारीख़ और खलिफ़ा-ए-की शफ़क़त और मुहब्बत के वाक़ियात वर्णन करते। छोटे से छोटा बच्चा भी अगर घर में आ जाता तो उसे भी बग़ैर तवाज़ो और मेहमान-नवाज़ी के घर से न जाने देते।

बासिल साहिब नायब वकील खेतीबाड़ी लिखते हैं कि समीउल्लाह स्याल साहिब इंतेहाई हमदर्द वजूद थे। ख़िलाफ़त से बे-पनाह मुहब्बत और इशक़ था। दफ़्तर में कारकुनान की माली इमदाद भी करते थे। हमेशा ख़लीफ़-ए-वक़्त के साथ ताल्लुक़ में रहने की तलक़ीन करते थे। कहते हैं हिमेश यही दरस दिया कि जमाअसत के एक-एक पैसे की हिफ़ाज़त करनी है और जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि यह फ़िक्र नहीं कि पैसा कहाँ से आएगा असल यह फ़िक्र है कि पैसे को सँभालने वाले कहाँ से आएँगे। वे मिलते रहें। (उद्धरित अल् वसीयत, रुहानी खाज़ाएन भाग 20, पृष्ठ 319)

फिर कहते हैं कि जब भी कोई वाकिफ-ए-ज़िंदगी या कारकुन या कोई अहमदी मिलने के लिए आता तो यही कहते कि जमाअत की ख़िदमत में बहुत ही बरकत है और जो ख़िदमत करता है अल्लाह तआला उसे बे-इंतिहा नवाज़ता है और अल्लाह तआला ख़ुद ही उनकी ज़रूरीयात पूरी करता चला जाता है। अपनी मिसाल देते हैं कि मैं कुछ भी नहीं था। अल्लाह तआला ने मुझे बेशुमार दिया और यह सिर्फ़ वक़्फ़ की बरकत है।

नसरीन हई साहिबा कहती हैं कि हमारे ख़ानदान के अहम अफ़राद में से थे। मेरी वालिदा और वालिद हमेशा उनकी बहुत इज़्ज़त करते थे। उनकी कोई बेटी नहीं थी। मैं जब सात या आठ साल की हुई तो उन्होंने और फुप्पो ने मुझे adopt किया। इसके बाद में शादी तक उनके पास रही। दोनों ने मुझे हमेशा अपनी बेटी की तरह रखा और बचपन से मेरी प्रत्येक ख़ाहिश का ख़्याल रखा। बेहतरीन तालीम दिलवाई। मेरी शादी मुरब्बी सिलसिला से करवाई।

महमूद ताहिर साहिब सैक्रेटरी फ़ज़ल-ए-उम्र फ़ाउंडेशन कहते हैं कि उन्होंने एक दफ़ा बताया कि जब मैंने बी.ए कर लिया और इबतेदाई तक़र्रुर हुआ तो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की हिदायत पर मुझे एम.ए. करने के लिए भेजा जाने लगा। उस वक़्त दफ़्तर में किसी ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से इस ख़दशा का इज़हार किया कि इस को आप एम.ए. करवा रहे हैं। यह एम.ए. कर के कहीं दौड़ न जाए और कहीं दुनियावी नौकरी न इख़्तेयार कर ले। इस पर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया स्याल बेवफ़ा नहीं होते।

इमरान बाबर साहिब वाकिफ-ए-ज़िंदगी निगरान जायदाद तहरीक-ए-जदीद कहते हैं कि मुझे पंद्रह साल उनके साथ काम करने का अवसर मिला। बड़े मज़बूत

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 27-03 November 2022 Issue No. 43-44

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

आसाब के मालिक थे। जमाअती काम के हवाले से कभी भी सरकारी अफ़्सर से मिलने या बात करने से नहीं झिजकते थे। और ट्रेन में सफ़र करने का अवसर मिला। सफ़र के दौरान तब्लीग़ ज़रूर करते थे और ऊंची आवाज़ में किया करते थे ताकि क़रीब मौजूद सब अफ़राद सुन लें।

लुक़्मान साहिब वकीलुल माल अव्वल कहते हैं कि ख़िलाफ़त की आवाज़ पर ख़ुद भी लब्बैक कहने वाले थे। दूसरों को भी तवज्जा दिलाते थे। हमेशा जब तहरीक-ए-जदीद का ऐलान होता तो फ़ौरन आते और अपना चंदा इत्यादि अदा करते, वादा लिखवाते।

शेख़ हारिस साहिब हैं तहरीक-ए-जदीद में। वे कहते हैं कि जब वक़्फ़ किया तो आप ने मेरी प्रत्येक मरहले पर राहनुमाई की। बहुत ही मुहब्बत और शफ़क़त का सुलूक फ़रमाते थे। बहुत निडर और दबंग वाक़िफ़ ज़िंदगी थे। सिलसिला के अम्वाल की बचत के धनी थे और फिर यह हारिस साहिब ही लिखते कि 2015 ई. में इंजनीयर जावेद साहिब चेयरमैन पाकिस्तान इंजनियरिंग कौंसल इस्लामाबाद से ख़ुसूसी तौर पर रब्वः के दौरा पर आए। उनकी मुलाक़ात दीगर बुज़ुर्गान के इलावा स्याल साहिब से करवाई गई। इस मुख़्तसर मुलाक़ात में आपने तब्लीग़ का अवसर हाथ से न जाने दिया और उन्हें बड़े अच्छे रंग में तब्लीग़ की। अल्लाह तआला मरहूम से रहम और मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाए। जो वक़्फ़-ए-ज़िंदगी का बेटा है उसे भी वक़्फ़ निभाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। ख़िलाफ़त और जमाअत से उनकी औलाद को जोड़े रखे और उनके लवाहेक़ीन को सुकून अता फ़रमाए।

अगला वर्णन है आदरणीया सिद्दीक़ा बेगम साहिबा पत्नी अली अहमद साहिब मरहूम मुअल्लिम वक़्फ़ जदीद का जिनकी गुज़शता दिनों पचासी साल की उम्र में वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अब्दुल हादी तारिक़ साहिब उनके बेटे मुरब्बी सिलसिला हैं और जामिआ अहमदिया घाना में उस्ताद हैं। फेरोचेची क़ादियान के नज़दीक उनकी पैदाइश हुई थी। उनके वालिद अब्दुलरहमान साहिब जवानी में ही 1944 ई. में वफ़ात पा गए थे। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनकी बेवा वालिदा नवाब बी-बी साहिबा और बच्चों को कफ़ालत में ले लिया और क़ादियान बुला लिया तो हज़रत नवाब अम्तुल हफ़ीज़ बेग़म साहिबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने बंगले में रख लिया और मुरब्बी साहिब कहते हैं कि ख़ाकसार की नानी हज़रत नवाब अम्तुल हफ़ीज़ बेगम साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हा की ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाती रहीं। इस तरह फिर तक़सीम-ए-हिंद के बाद कहते हैं हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने मेरी नानी को उनके बच्चों के साथ नासिर आबाद फ़ार्म सिंध भिजवा दिया जहां यह पले बढ़े।

हज़रत मियां अल्लाह दत्ता साहब रज़ियल्लाहु अन्हो सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बहू थीं। एक वाकिफ-ए-ज़िंदगी की बीवी थीं, एक वाकिफ-ए-ज़िंदगी की वालिदा थीं। आपने अपने वाक़िफ़ ज़िंदगी ख़ावंद के साथ वक़्फ़ की पूरी रूह से वाक़िफ़ ज़िंदगी जैसी ज़िंदगी गुज़ारी और प्रत्येक किस्म के न मुसायद हालात में अपने वाक़िफ़ ज़िंदगी शौहर का साथ दिया। ज़िंदगी-भर कभी किसी से मुतालिबा या तक़ाज़ा नहीं किया। बेशुमार ख़ूबियों की मालिक थीं जिनमें नुमायां तौर पर आजिज़ी, ख़ुदातरसी, दरवेशी, मेहमान-नवाज़ी, नरम मिज़ाजी, सादगी, क़नाअत, सब्र, बेपनाह हौसला शामिल था। ज़िंदगी-भर कभी किसी से कोई शिकवा और शिकायत नहीं की और न ही कभी किसी की बुराई सुनी और नाबुराई की। हमेशा अपनों और परायों से मुहब्बत और ख़ुलूस का सुलूक किया। पंजगाना नमाज़ों के इलावा बाक़ायदा तहज्जुद का इंतेज़ाम रखा। इसी तरह तिलावत क़ुरआन-ए-करीम बाक़ायदा करने वाली थीं और आख़िरी दिनों में ख़राबी सेहत के बायस जब नमाज़ सही तरह अदा न हो सकती थी तो यही दुआ किया करती थीं कि मौला इतनी सेहत और हिम्मत दे दे कि तेरी इबादत सही तरह कर सकूं।

पीछे रहेने वालों में उनकी दो बेटियां और तीन बेटे शामिल हैं। जैसा कि मैंने कहा एक बेटे अब्दुल हादी तारिक़ साहिब घाना में मुरब्बी सिलसिला हैं और वहां मैदान-ए-अमल में होने की वजह से अपनी माता के जनाज़े में शामिल नहीं हो सके।

अल्लाह तआला इन सबको सब्र और हौसला अता फ़रमाए, उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और मरहूमा से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए, दर्जात बुलंद फ़रमाए।

★ ★ ★

पृष्ठ 01 का शेष

इस आयत में इब्राहीम अलैहिस्सलाम को उम्मत कहा है। इसके एक तो यह अर्थ हैं कि वह नेकी की तालीम देने वाला और सब किस्म की ख़ैर का जामा था। दूसरे मेरे नज़दीक इधर भी इशारा है اِجْتَبَاہُ कि इसके अंदर वह ताक़तें मौजूद थीं जिनसे उम्मतें पैदा होती हैं।

यहाँ तक कि इन ताक़तों की वजह से उम्मत कहा जा सकता है मानो वह दरख़्त उम्मत के लिए बतौर बीज के था।

इस आयत में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की बहुत सी सिफ़ात बयान फ़रमाई हैं। एक तो यह कि वह ख़ैर के मोअल्लिम थे। दुनिया को नेकी की तालीम देते थे। दूसरे यह कि वह ख़ैर का संग्रहीता थे। सब किस्म के अख़लाक़ फाज़िला उनमें पाए जाते थे। तीसरे यह कि वह निहायत आला फ़ितरत रखते थे जो ज़बरदस्त उत्पत्ति की क़ुव्वतें गुप्त रखती थी जिससे उम्मतों का पैदा होना सम्भव था। चौथे यह कि वह नमाज़ में ख़ुदा से दुआ माँगने वाले थे। अल्लाह तआला के फ़रमांबर्दार थे। दुआएं करने वाले थे। पांचवें यह कि वह हनीफ़ थे अर्थात ज़बरदस्त मुकाबले की शक्ति रखते थे और कभी यहाँ तक कि रास्ते से दूसरी तरफ़ माइल नहीं होते थे, छेवीं यह कि वह मुशरिक नहीं थे अर्थात तौहीद पर कामिल तौर पर क़ायम थे। यह कामिल तौहीद के माने इस से निकलते हैं कि قانتاً لله और حنیفا के बाद यह वाक्य रखा गया है जिससे मालूम होता है कि इस जगह आम मोहिद मुराद नहीं। बात यह है कि आम तौर पर इन्सान जब उसके अंदर खूबियां पैदा हो जाएं अपनी ज़ात पर भरोसा करने लग जाता है और इस में किबर और ख़ुद-बीनी और स्वेच्छाचारिता आत्मप्रशंसा पैदा हो जाती हैं और वह अपने आपको बड़ा समझने लग जाता है, यह भी एक किस्म का शिर्क है। अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम के विषय में यह फ़र्मा कर कि لَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ यह बताया है कि बावजूद इतनी ख़ूबियों के वह ख़ुदा ही का बंदा रहा और अपने नफ़्स की ख़ूबियों को अपनी तरफ़ मंसूब करके शिर्क का मुर्तक़िब कभी नहीं हुआ।

(तफ़सीर-ए- कबीर भाग 4 पृष्ठ 268 प्रकाशन क़ादियान 2010 ई.)

★ ★ ★

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.
चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(جمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें,
इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन
ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad